

મસાઇલે હજ વ ઊમરહ

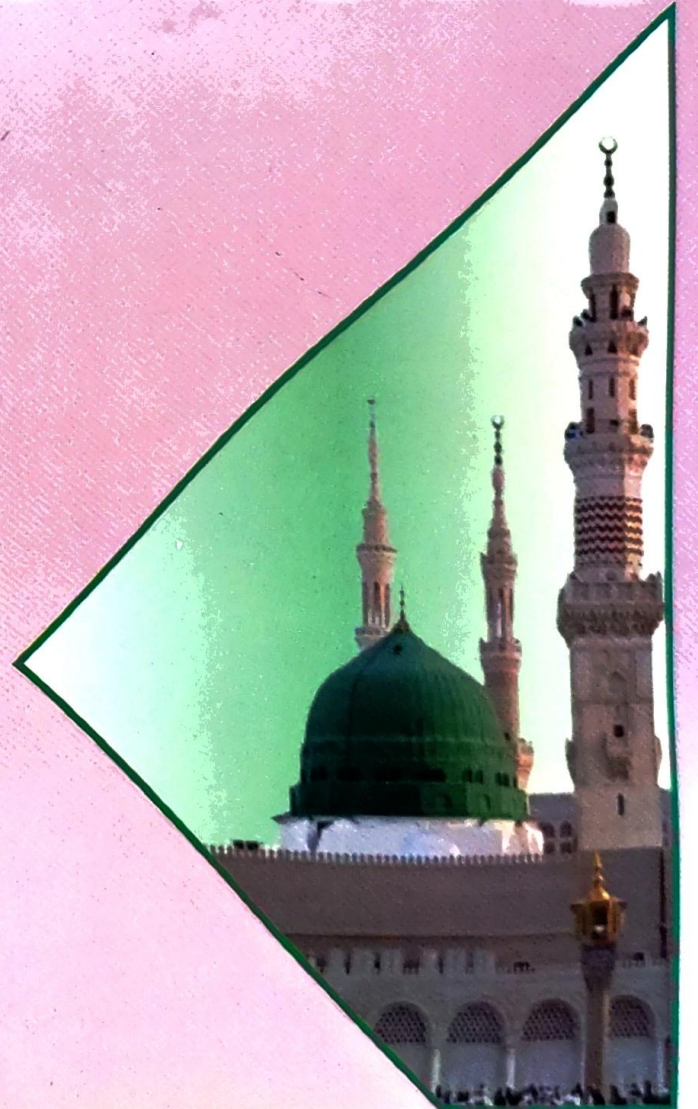


સુવાલાત

હાજી ઈબ્રાહીમ ભાઈ વડીયાવાલા
(અહમદાબાદ ગુજરાત)

જવાબાત

મુફતી મુહમ્મદ શમ્સુલ કમર કાદિરી
(ફેઝાબાદ યુ.પી.)



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

મસાધલે

હજ વ ઊમરહ

સુવાલાત

હાજી ઇબ્રાહીમ ભાઈ વડીયાવાલા
(અહમદાબાદ ગુજરાત)

જવાબાત

મુફ્તી મુહમ્મદ શમ્સુલ કમર કાદિરી
(ફૈઝાબાદ યુ.પી.)

તફસીલાતે કિતાબ

જુમ્લા હુકૂક બ હકકે મોહસિને આઝમ મિશન મહફૂઝ હૈ.

- કિતાબ : મસાઈલે હજ વ ઉમરહ
 સુવાલાત : હાજી ઈબ્રાહીમ ભાઈ વડીયાવાલા
 મોબાઈલ : 9624221212
- જવાબાત
 વ પ્રુફ રીડિંગ : મુફ્તી મુહમ્મદ શમ્સુલ કમર કાદિરી
- ટાઈપ-સેટીંગ : જનાબ તૌફીક અહમદ અશરંફી (બખૌદા)
 M : 9033168086, 7383761217
- સિને ઈશાઅત : ઝિલ હજ સિને 1443 હિ./જુલાઈ 2022 ઈ.
 તા'દાદ : 5000
- કીમત : દુઆએ ખૈર
- નાશિર : મોહસિને આઝમ મિશન (સેન્ટ્રલ કમિટી)

2/B કીર્તિકુંજ સોસાયટી શાહે આલમ ટોલનાકા

અહમદાબાદ-380028

-: મિલને કા પતા :-

મક્તબએ શૈખુલ ઈસ્લામ, અલિફ ફરિના કે સામને,

રસૂલાબાદ, શાહે આલમ અહમદાબાદ-380028

ઔર મોહસિને આઝમ મિશન કી તમામ બ્રાન્ચે

કોન્ટેક્ટ : 9624221212

इंडरिस्त

नम्बर	मजामीन	सफ़टा
1	किताब लिखने की वजह	5
2	जवाबत मअ सुवालात	7
3	औरत का अकेले उमरु के लिये जाना कैसा ?	7
4	हरम की छोटल में ना महरम मर्द, औरत का साथ में रहना कैसा?	8
5	औरतों का बा जमाअत नमाज अदा करना कैसा ?	8
6	मशीनी जूबुड किया हुवा या गैरों के हाथ नोनवेज खाना कैसा ?	9
7	बिगैर अहराम हुदूदे हरम में दाखिल होना कैसा ?	10
8	डलक नहीं करने वाले के बारे में हुकुम	11
9	कभूतर को दाने खिलाना कैसा ?	14
10	नमाजी के आगे से गुजरना कैसा ?	15
11	पके हुवे खाने को बिगाणना/इंकना कैसा ?	16
12	क्या सउदी, नजदी, वलाबी डक पर हैं ?	17
13	उज्जे बदल की तरु उमरे का भी बदल हैं ?	18
14	आबे जमजम के बाब में हुकुम	19
15	खलते हुवाई जहाज या ट्रेन में नमाज का हुकुम	21
16	औरतों के गलत अकीदे और आ'माल	21
17	नमाजे अस्र के बा'द वाजिबुतवाइ नमाज	22
18	ईमाम का बद अकीदा होना साबित हो तो क्या उस की ईक़िदा ख़ाईज है ?	22
19	औरतें अपनी नमाज रुम में पढ़े या हरम में क्या बेहतर ?	23
20	हरम में नमाजे अस्र उन के हिसाब से न पढ़े बल्के उनही टाईम टेबल से पढ़े	25

21	ઝકાત લે કર હજ કો જાના કેસા ?	26
22	કર્ઝ અદા ન કરને વાલે કી હજ	26
23	ઈમામ કે આગે નમાઝી	27
24	વાદિએ મુહસ્સર	27
25	બારગાહે રસૂલે મકબૂલ કે આદાબ	28
26	ગીબત ચોક	28
27	મદીને મેં ડોનેશન લિખવાએ ઓર ઈન્ડિયા મેં પેમેન્ટ કરે તો ક્યા ?	29
28	મસ્જિદે કુબા મેં નમાઝ	30
29	કબૂતર કે આગે સે દાના ઉઠા લેને સે ઓલાદ નહીં હોતી	30
30	હાજી કુરબાની કેસે કરે ?	31
31	હરમ કી હદ	32
32	મોમિન કી નિયત	33
33	હરમ કી હોટલ મેં જુમ્આ યા ઈદ કી નમાઝ કા હુકમ	33
34	તવાફ કરને કે લિએ ઝૂટ બોલના યા ધોખા દેના	35
35	માહે શવ્વાલ કે રોઝે	36
36	કસ્ર નમાઝ યા પૂરી નમાઝ ?	38
37	વાલિદૈન કી ઈજાઝત કે બિગૈર હજ કરના કેસા ?	39
38	હરમ મેં ઈદ કી નમાઝ	40
39	એ'તિકાફ કી નિયત કી ઓર પૂરા ન કિયા તો ?	40
40	સાબૂ ઓર શેમ્પુ કી ચોરી	42
41	કબ્ર મેં મદીનએ મુનવ્વરા કી મિટ્ટી રખના કેસા ?	43
42	હજ કી ઝરૂરી મા'લૂમાત	46
43	ક્યા હજ મકબૂલ ? હઝરત શૈખુલ ઈસ્લામ	68
44	મકબૂલ હજ : સચ્ચિદ દાદા બાપૂ કાદિરી	69

किताब लिखने की पत्र

अल उम्दुलिल्लाह सुम्मा अल उम्दुलिल्लाह, अल्लाह पाक के इज्जल और नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के बुलाने से 2022 रमजान में हरमे पाक की हाजिरी नसीब हुई. दौराने सफ़र और इस से पहले भी हाजियों की ला इल्मी, जहालत, सगिदी हुकूमत की मक्कारी, टूर्स ओर्गेनाईजर्स का जूट इस तरह सामने आया के दिल रो पणा. अवाम की पोझिशन तो येह के इल्म है नहीं, और हासिल करना नहीं, किसी को पूछना नहीं, बस जो सब करते है वोह करना हैं या जो नफ़स कहे वोही करना है, अल्लाह पाक तो इरमाता है कुरआन को समजो इस में गौर करो, कुरआन हमारे rules, regulations, law and order है, अल्लाह पाक इरमाता है इस-अलु अहलज़् जिदी इन हुन्तुम ला तअलपुन. इल्म वालों से पूछो अगर नहीं जानते. मगर हम नहीं पूछते... उलमा की पोझिशन येह हैं के उन में से अक्सर बताते नहीं, गुंगे शैतान की तरह और येह जो ज़राब अकीदा आलिम है वोह अवाम को गुमराह करता है और हक परस्त सुन्नी आलिम जामोश रहते है वोह अवाम को गुनाह से नहीं रोकते, ज़हिल पीरो की बोल बाला और सय्ये पीर या मुफ़्ती मौलवी युप...! हम किताबें तो बहुत लिखते हैं अमल की इज़ीलत पर मगर अमल की ज़राबी (मनाइय्यत) पर कोई किताब नहीं, जब के सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने तो इरमाया... येह काम करो, येह मत करो. इस से रुक जाओ.

सगिदी हुकूमत तो यहुदियों की रविश पर है, का'बे की कमाई से जो पीते है शराब, येह दुश्मनाने रसूल, दुश्मनाने दीन... जैसे का'बा उन की दुकान है. रही बात टूर्स ओर्गेनाईजर्स की, उन में अक्सर 100% प्रोडेशनल है, उन से कोई क्या उम्मीद रहे ! कुछ को छोड़ कर

बाकी तमाम जूटे मक्कार और जाहिल है, उन को सिर्फ अपनी कमाई से मतलब है.,. अब अवाम जाये तो जाये कडा ? दुर्वेशी भी अथ्यारी है सरदारी भी अथ्यारी बिल्कुल वोड दौर आ यूका.

ब कौले शैभुल ईस्लाम : ईस दौर में मस्जिद के मुतवल्ली और उज उमरह के दुर्स वाले येड दो गिरौह सब से जियादा जूटे हैं.

हदीसे मौला अली में भी येड बात कहीं गई के आबिरी जमाने के डाख कैसे लोगे ! कौले रसूल येड है के अवाम को गुनाह से ना रोकने वाला गुंगा शैतान है. और अल्लाह पाक भी इरमाता है : समजाओ के समजाना इाईदा देता है.. मगर उलमा व पीर पामोश !...

ऐसे में हमें क्या करना चाडिये ? जो हालत सफरे उज उमरह की है वोही हालत जियारते औलिया की भी है, तो हमने सोचा के उलमाओ को पूछ कर कोई ऐसी किताब तय्यार की जाये, जो लोगों को अमल की पंराबी के बारे में बताये.

(1) हमारे कुछ अमल ऐसे हैं जिसे हम नेकी समज कर करते है मगर उस से कुछ भी हासिल नहीं होता.

(2) हमारे कुछ अमल ऐसे हैं जिसे हम नेकी समज कर करते तो है मगर उल्टा उस से गुनाह होता है.

(3) हमारे कुछ अमल ऐसे हैं जिसे हम नेकी समज कर करते है मगर जिस के करने से ईमान पतरे में पण जाता है. लोग 20/25 उमराह 10/10 उज करते हैं मगर दिल नर्म नहीं होता..ऐसा क्यूं ? ईसी को समजने के लिये मुफ्ती शम्सुल क्मर कादिरि साहिब को पूछ के सुवाल जवाब की शकल में येड किताब तय्यार की गई है और साथ में आसान उज और उमरह का तरीका भी बताया गया है. अल्लाह पाक कौम को इाईदा पहुंचाये और अमल को कुबूल इरमाये और हमें दीन और कौम की पिदमत करने की तौफ़ीक अता करे. आमीन !



સુવાલાત મઅ જવાબાત



કયા ફરમાતે હૈં મુફ્તિયાને કિરામ મુન્દરજા ઝૈલ મસાઈલ કે બારે મેં કે

સુવાલ (1) : મક્કે મેં ઔરતોં કા અકેલે ઉમરહ કી નિયત સે મસ્ઠિદે આઈશા તક આના જાના ઔર ઈન્ડિયા સે બિગૈર મહરમ જાના કેસા ?

અલ જવાબ (1) : ઈસ્લામ મેં ઔરત કો ફર્જ હજ કી અદાએગી કે લિએ ભી મહરમ મર્દ યા શૌહર કા હોના શર્ત હૈ યે જાઈકે ઉમરહ કે લિએ સફર કરના હો.

મહરમ કે બિગૈર શરઈ સફર કરના યા'ની (92 કિલો મીટર) નાજાઈઝ હૈ. ખ્વાહ ઔરત જવાન હો યા બુઢી હો ઔર અગર કોઈ ઔરત માલદાર હૈ લેકિન ઉસ કા શૌહર યા કોઈ મહરમ નહીં હૈ યા મહરમ મૌજૂદ હૈ મગર ઔરત ઉસ કે અખરાજાત બરદાશત નહીં કર સકતી તો ઉસે યાહિયે કે વોહ ઈન્તિઝાર કરે તા વક્ત યેહ કે મહરમ કા બન્દોબસ્ત હો જાએ યા મહરમ કે અખરાજાત કા ઈન્તિઝામ હો જાએ ઔર તા હયાત ઈન્તિઝામ ન હો સકે તો ઉસ પર હજ ફર્જ હોને કે શરાઈત પૂરે ન હુએ ઈસ લિએ ઉસ પર હજ કરના વાજિબ હી ન હુવા ઈસ લિએ વોહ વસિયત કર જાએ કે મેરે મરને કે બા'દ કિસી કો હજજે બદલ કરા દેં ઔર અગર બિગૈર મહરમ કે સફર કર કે હજ યા ઉમરહ કરેગી તો કરાહતે તહરીમી કે સાથ અદા હો જાએગા ઔર મહરમ કે બિગૈર સફર કરને કા ગુનાહ હોગા.

(ફતાવા શામી કિતાબુલ હજ, જિલ્દ : 2, સ. 465)

“لا يحل لامرأة تؤمن بالله واليوم الآخر تسافر”
 उदीसे पाक में है

“مسيرة يوم وليلة الامع ذى محرم عليها”
 (बुधारी व मुस्लिम) या'नी
 मुसलमान औरत के लिये शर'ह सफ़र बिगैर महरम के उदाल नही है.

सुवाल (2) : हरम में उडल के रुम में औरतों के साथ ना महरम
 का डोना क्या जा'रु है ? और अगर नाजा'रु या हराम डो तो इस के
 लिये जिम्मेदार फुड औरत या उस का शौहर या वली है ?

अल जवाब (2) : इस्लाम में बालिग औरत पर पर्दा इरु है
 फ्वाड उडल डो या और कोरु जागड ना महरम मरु के साथ डोना
 बिलाशुबा नाजा'रु है. याडे वोड हरम में डो या गैर हरम में डो.
 अव्वलन तो फुड औरत इस गुनाड की जिम्मेदार है क्यूंके बे पर्दगी से
 बनना फुड उस की जिम्मेदारी है अलबत्ता अगर इस गुनाड पर उस का
 शौहर या उस का वली रानी है तो वोड भी गुनडगार डोंगे क्यूंके
 कुरआने पाक में “تعاونو على البر والتقوا لا تعاونوا على الاثم والعدوان”
 लिखाऊ “تعاون على الاثم” की बिना पर शौहर और वली भी गुनडगार
 डोंगे.

सुवाल (3) : औरतों का इमाम के पीछे जमाअत के साथ इरु
 नमाजे और नमाजे जनाऊ अदा करना क्या जा'रु है ?

अल जवाब (3) : औरतों का मरु की जमाअत में डालिर डो कर
 इरु नमाऊ अदा करना मुत्लकन मकरुड है, दुरे मुप्तार में है “ويكره”
 “حضورهن الجماعة” और येही हुकम नमाजे जनाऊ का भी है अलबत्ता
 तन्हा औरतों की जमाअत मकरुड नही है दुरे मुप्तार में है “واعلم ان”
 “جماعتهن لا تکره في صلاة الجنابة” लिखाऊ बा पर्दा डो कर अलग से
 जनाऊ गाड तक जा'रु और वहां उन के लिये अलग थलग इन्तजाम
 डो तो वोड नमाजे जनाऊ अदा कर सकती हैं क्यूंके उदीस में इस का
 सुभूत मिलता है उजरते आ'रुशा सिदीका رضی اللہ تعالیٰ عنہا ने अक सडाबिये

रसूल ﷺ की नमाजे जनाजा अदा की थी. युनान्चे जभ उजरते सा'द बिन वक्कास رضی اللہ تعالیٰ عنہ ँन्तिकाल कर गये तो उन्हों ने इरमाया के "ادخلوه المسجد حتى اصلى عليه" या'नी उजरते आर्शा ने इरमाया के सा'द बिन वक्कास की मय्यित को मस्जिद में लाओ ताके मैं उन पर नमाजे जनाजा पढ़ूं. (सहीह मुस्लिम, जि : 2, स. 669)

सुवाल (4) : मशीन से जभु यिकन / मटन और नोन मुस्लिम का जभीहा या ओन लाँन डिलीवरी जो नोन मुस्लिम लणके करते हैं उस का पाना कैसा है ? पूरे सउदी में येही मिलता है येह लोग स्वीडन, डेनमार्क, नेधरलेन्ड वगैरा ँसाँ कन्ट्री से ँम्पोर्ट करते हैं.

अल जवाब (4) : जानवर के जभु के शराँत में से है के जभु इरने वाला आकिल बालिग मुसलमान या अहले किताब हो ब-शर्त येह के वोह अपने पैगम्बर के उसूल और कुतुबे समाविय्या (आस्मानी किताबों) को बिगैर किसी तहरीफ के मानता हो. दहरिया न हो और जभु करते वक्त अल्लाह के साथ ँसाँ पैगम्बर वगैरा का नाम न लेता हो. और जभु ँप्तियारी में येह बी. उर्री है के गले की यारों रगें या ँन में से अक्सर कट जाँ और जभु इरने वाला तेज धारदार आले से जभु करे. रहा मशीनी जभीहा तो ँस में येह सब शराँत नहीं पाँ जते लिहाजा मशीन के उरीँ जभु इरना पिलाके शरअ और मशीनी जभीहा उलाल नहीं है हां अगर मशीन का काम सिर्फ ँस उद तक हो के वोह जानवर को काबू इरने और ँस अमल से जानवर की मौत वाकेअ न हो और मशीन जानवर को गुजारती जाँ और मशीन के छुरी इरने के बजाँ वहां मुसलमान या अहले किताब पणे हो कर अपने सामने से गुजरते हुँ जानवरों को बारी बारी इर अक पर तस्मिया पढते हुँ अपने हाथों से तेज धारदार आले की मदद से जभु करें तो ँस सूरत में जभीहा उलाल और ँस का पाना जाँउ होगा.

ओन लाईन गैर मुस्लिम का जभीडा जो हिन्दू लणके करते हैं बिलाशुभा उराम है और बाहर ममालिक पास कर गैर मुस्लिम मुल्क से जो गोशत दरआमद किया जाता है इन के बारे में मा'लूम नहीं के जभीडा मुस्लिम का है या गैर मुस्लिम और शरई तरीके से जभूड किया जाता है या नहीं इस लिअे मुसलमानों को जैसे ममालिक से दरआमद (वारिद होना) गोशत को खाने से बचना चाडिये.

हदीसे पाक में है :

”الحلال بين والحرام بين وبينهما مشتبهات لا يعلمهن كثير من الناس فمن التقى استبرأ لدينه وعرضه ومن وقع في الشبهات وقع في الحرام“ (مشكوة)

हलाल वाजेह है और हराम वाजेह है और इन दोनों के दरमियान मुशतबा (शक वाली) चीजें हैं जो अक्सर लोग नहीं जानते लिहाजा जिन शप्स ने मुशतबा (शक वाली) चीजों से परहेज किया उस ने अपने दीन से और अपने ईज्जत को मरूज किया और जो शप्स मुशतबा (शक वाली) चीजों में मुत्तला हुवा वोह हराम में मुत्तला हो गया. हां अगर यकीनी तौर से मा'लूम हो के दरआमद शुदा (दूसरे मुल्क से मंगवाया हुवा) गोशत में शरई जभूड का लिहाज रखा गया है और पूरी तहकीक हो तो खाना दुरुस्त है वरना सिर्फ पेकेट या डिब्बे पर सिर्फ हलाल लिखे होने पर अतिबार नहीं किया जायेगा.

सुवाल (5) : कुछ लोग अहराम नहीं बांधते अहमदाबाद-मुम्बई से मक्का बिगैर अहराम आते हैं ऐसा करना कैसा है ?

अल जवाब (5) : आइंकी जो शप्स उज या उमरु की नियत से अहराम बांधे बिगैर हुदूदे हरम से गुजरते हुअे जिद्दा अरपोर्ट पर उतर जाअे तो उस पर हम या'नी बकरी वगैरा की कुरबानी लाजिम होगी और अब अगर वोह शप्स वापर अपने या दूसरे मीकात या किसी भी मीकात (वोह जगह जहां से हाज्ज अहराम बांध कर ही का'बे

के लिये रवाना हो सकते हैं) के मकात्त में जा कर अहराम बांध ले तो उस पर भीकात से बिगैर अहराम के गुजरने का जुर्म साकित (रद) हो जायेगा. सुनान्थे

दुर्गे मुप्तार मअ रदुल मुहतार में है :

أفأقى مسلم بالغ يريد الحج ولو نفلا او العمرة و جاوز وقته ثم احرم لزم دم كما اذا لم يحرم فان عاد الى ميقات ما ثم احرم سقط دمه

और जो शप्स के एस का एरादा हुदूदे हरम में जाने का न हो बल्ले हुदूदे हरम से बाहर हिल ही में रहने का हो तो वोड हिल के लिये भीकात से बिला अहराम गुजर सकता है.

दुर्गे मुप्तार में है :

امالوقصد موضعا من الحل مما بين الميقات والحرم اما لوقصد من الحل كخليص وجده

वाजेड रहे के भीकात और हरम के दरमियान जो मकामात हैं उन्हें हिल (हरमे का'बा से बाहर का अलाका) कहा जाता है. जैसे पलीस और जिदा.

सुवाल (6) : कुछ लोग हलक नही करते क्या येड गुनाह है ?

अल जवाब (6) : हाज्ज या मो'तमिर (उमरु करने वाला) बिगैर हलक के अगर अहराम षोल दें तो येड बिलाशुबा गुनाह है हाज्ज का हुकम येड है के उज के बा'द अभी वोड मक्का ही में हो और अय्यामे कुरबानी बाकी हो तो हलक कर ले या करा ले ताप्पीर की वजह से कोई दम नहीं वाजिब होगा और अगर अय्यामे नहर या'नी कुरबानी के दिन गुजर जाने के बा'द करायेगा तो अक दम वाजिब होगा और अगर अय्यामे कुरबानी भी गुजर गये और अहराम से बाहर आ गया और फिर हलक कराया तो दो दम वाजिब हो गये अलबत्ता हलक करा लेने की सूरत में बहर डाल डलाल हो जायेगा.

दुरे मुप्तार में है:

او حلق في حل بحج في ايام النحر فلو بعدها فدمان قوله فدمان اي دم للمكان ودم
للزمان قوله لا اختصاص الحلق اي لهما بالحرم واللحج في ايام النحر

और मो'तमिर (उमरुड करने वाले) का हुकूम ये है के उमरुड के
बा'द या'नी तवाड़े का'बअे मुअज़्ज़मा और सई सई व मरवुड के बा'द
हुकू न किया और अहराम ढोल दिया तो हरम में रहते हुअे हुकू कर
ले या करा ले तो कोई हम नहीं अगर हुकू के लिअे बिगैर वापस लिल
या'नी हरम से बाहर आ गया तो अक हम वाजिब डोगा क्यूंके उमरुड
में सिर्फ हम लिलमकान है हम लिलममान नहीं है.

वाजेह रहे के उज और उमरुड के सिव्सिले में जो हम वाजिब
डोगा है उस का हरम की हुदूह में ही जभूड करना जरूरी व लाज़िम है.
हुदूहे हरम से बाहर किसी और जगह जभूड करने से हम अदा नहीं
डोगा लिलमकान हुदूहे हरम में जुद जा कर हम अदा करे या अपना किसी
को वकील बना दे तो अैसी सूरत में उमरुड अदा हो जाअेगा.

इत्हुल कदीर में है :

لا يجوز ذبح الهدايا الا في الحرم بقوله تعالى في جزاء الصيد، هديا بلغ الكعبة
المائده فصار اصلا في كل دم هو كفارة ولان الهدى اسم لما يهدى الى مكان ومكانه
الحرم قال صلى الله عليه وسلم منى كلها منحر وفجاج مكة كلها منحر

(इत्हुल कदीर, जि : 3, स. 163)

सुवाल (7) : जिन लोगों ने हरम के हाम के पीछे नमाज़ पढी,
अगर उन की नमाज़ नहीं हुई तो क्या वोह बन्दा नमाज़ छोडने के
गुनाह में हुवा ? हो गई तो कैसे हुई ? और गुनाह हुअे तो कितने
गुनाह अक या अक लाख ?

अल जवाब (7) : हरमैने तय्यिबैन की दोनों मसाजिह में हाम
हैबने अब्दुल वइहाब नजदी के अकीदे के पैरुकार हैं येह तहकीक शुहा

भात है. और अबलामा एबने आबिदीन शामी *سورة قدس* ने रदुल मुप्तार में लिखा है के नजदियों का अकीदा येह है के मुसलमान सिर्फ वोही हैं एन के एलावा दुन्या के मुसलमान मुशिरक हैं और देवबन्दियों के शैखुल इस्लाम मौलाना हुसैन अहमद टांडवी ने अशिशहाबुस्साकिब में लिखा है के वहाबिया नजिदया शाने रिसालत में एन्तिहाई गुस्ताफाना कलिमात इस्ति'माल करते हैं और पूरी दुन्या के मुसलमानों को मुशिरक मानते हैं. लिहाजा सारे जहां के मुसलमान तो दर किनार सिर्फ एक मुसलमान को जो काफिर कहे वोह फुद काफिर है. जैसा के उदीस में है और उम्मत का इस बात पर इजमाअ है के किसी नबी की मा'भूली गुस्ताफी करने वाला भी काफिर है. इस लिअे नजदी अपने कुफी अकाईद की बुन्याद पर काफिरो मुर्तद हैं और जो काफिरो मुर्तद हो उस की नमाज नमाज नहीं न उस के पीछे किसी की नमाज दुरुस्त है. इस वजह से नजदी इंगोम के पीछे नमाज पढना जार्ज नहीं उन के पीछे पढना ऐसा है गोया नमाज कजा कर दी. मक्कअे मुअज़्जमा की शान येह है के वहां जहां एक नेकी पर लाख सवाब मिलता है वही एक गुनाह पर एक लाख गुनाह भी मिलता है. तो जिन लोगों ने नजदी इमाम के पीछे नमाज पढी जो उकीकत में कजा हुई. अब एन नमाजों को कजा करने का गुनाह कितना होगा बन्दअे मोमिन फुद सोच ले ? रदी बात जमाअत की तो जमाअत का सवाब उस वक्त मिलेगा जब नमाज सहीह हो जाअे और जब नमाज ही नहीं तो सवाब कहां से मिलेगा ? युनान्ये, इतावा शारहे बुभारी जि : 3, स. 73 में है जो लोग नजदियों के अकाईदे कुफिय्या पर मुत्तलअ हों और येह जानते हों के इमाम नजदी है फिर भी उस के पीछे नमाज पढ लें वोह लोग यकीनन सप्त गुनहगार हैं और नमाज के तारिक होंगे लेकिन जो लोग नजदियों के अकीदे से वाकिफ नहीं

जैसे आम दुज्जज और वोह लोग नमाज पढ लेते हैं तो उन पर कोई मुवाफका (पूछगछ, जवाब तलबी) नहीं.

(इतावा शारहे बुभारी किताबुल अकाईद जि : 3, सफहा 73)

सुवाल (8) : कुछ लोग कबूतर को दाने खिलाते है और इसे बहुत जियादा सवाब का काम समजते हैं कभी कभी दाने छतने जियादा हो जाते है के स्विपर उसे उठा कर क्यरे के डिब्बे में डाल देते हैं, क्या येह दाने खिलाना सहीह में जियादा सवाब का काम है ? या लोगों का वहम है.

अल जवाब (8) : कबूतरों को दाने खिलाना खिलाशुबा सवाब का काम है. युनान्थे, उदीसे पाक में है "فی کل کبدرطبة اجرهر" हर अक बतन को तर कर देने में सवाब है. याहे वोह ईन्सान हों या जानवर इस उदीसे पाक का शाने नुजूल तो अक जानवर कुत्ता है जो के प्यास की शिदत से तणप रहा था कुंओं के पास आया मगर पानी पीने का जरीआ न था अक सहाबी देष रहे थे उन्हें तरस आया वोह कुंओं में उतरे अपने फुफ (पाउं का मोजा) में पानी भरा और उस का मुंह बन्द कर के लाये कुत्ते को खिलाया. उदीसे पाक में है कुत्ते ने अल्लाह का शुक्र अदा किया. जिस की वजह से अल्लाह तआला ने सहाबिये रसूल की मगफिरत कर दी. अल्लाहे उदीस है "فشكرالله له فقال فی کل کبدرطبة اجر" (बुभारी व मुस्लिम व रिवायत अबू हुरैरा) जिस से साबित होता है के कबूतरों को दाना खिलाना भी कारे सवाब है. अलबत्ता जियादती दुरुस्त नहीं के छतने दाने डाल दें के जमीन पर ढेर लग जाये बरबाद हो जाये तजीअे माल (माल को धो देना) हो क्यरे की गाडी में उठा कर ले जायें इस कदर खिलाशुबा इसराफ व तब्जीर (दौलत का बेजा खर्च) है कुरआने पाक में है "ان المبذرين كانوا اخوان الشياطين" कुजूल और बेजा खर्च करने वाले शयातीन के भाई हैं तब्जीर का मा'ना ही है गैर जरूरी तौर पर खर्च

करना या'नी जिस का उक है उस पर न पर्य किया जाये येही तज्जीर है जो जार्ज नहीं है.

उमरते अब्दुल्लाह बिन अब्बास से जेरे आयत येही तफ्सीर मरवी है "تبذیر الانفاق فی غیر حق" जैसे के अल्लामा इस्माइल उक्की और अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी ने मजारात पर यादरों को यढाने के बारे में लिखा है के औदियाये किराम और उलमाये किबार के मजारात पर इन की ता'जीम के नुक्तये नजर से यादर यढाना जार्ज है. लेकिन इस में इकरात (फिरावानी) और बे अ'तिदावी करना सही नही है इस सूरत में इसराफ व गुनाह है लिहाजा कबूतरो को इतना दाना डालें के इसराफ (बिगाण) न हो तो जार्ज है वरना गुनाह है.

सुवाल (9) : क्या नमाजी के आगे से हरम में निकलना जार्ज है ?

अल जवाब (9) : उदीसे पाक में

عن المطلب بن وداعة انه رأى النبي صلى الله عليه وسلم يصلى مما يلي باب بنى

سهم والناس يمرون بين يديه وليس بينهما سترة

مُتَلَوِّبِ بْنِ وَدَاعَةَ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي مِمَّا يَلِي بَابَ بَنِي سَهْمٍ وَالنَّاسُ يَمْرُونَ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَا بَيْنَهُمَا سِتْرَةٌ

मुत्तलिब बिन वदाअह से मरवी है के हुजूर صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बाबे बनी सहम के करीब नमाज पढ रहे थे और लोग सामने से गुजर जाते थे हावां के दरमियान में सुतरह (रुकावट, आण) नहीं था. इसी उदीसे पाक से इस्तिबात (अप्ला) करते हुये हुकडा इरमाते हैं के मस्जिदे हराम में दीगर मसाजिद की तरह नमाजी के मकाम से हो सकों की जगह छोण कर गुजरना जार्ज है. इस उद के अन्दर गुजरना जार्ज नहीं है. मगर तवाफ करने वाले सजदे की जगह छोण कर गुजर सकते हैं और अगर शदीद मजबूरी की डालत हो तो इस में भी पुल्ले आम नमाजी के आगे सजदे की जगह के अन्दर से गुजर ने से इजतिनाब करना (बयना) याहिये. बल्के इस सूरत में किसी दूसरे शप्स को आगे कर के

सुतरा (आण) बना कर गुजरना चाडिये. न वक्ते ज़रूरत ईस की गुन्नाईश है. (هكذا ورد القرآن، ص १११)

सुवाल (10) : अक्सर दुर्स वाले बहुत बहुत जियादा पाना पकाते हैं और बचा हुआ सारा पाना उस्टबीन या'नी क्यरे की पेटी में डालते हैं और बहुत सारे डाञ्च प्लेट में बहुत पाना उठाते हैं और थोणा पाते हैं और जियादा ईक्ते हैं, और ईसे गुनाह नहीं समजते क्या ईस का हिसाब नहीं होगा ?

अल जवाब (10) : ईसी किस्म का सुवाल नम्बर 8 है जिस का जवाब दिया जा चुका है. ताहम येह बात अर्क कर दूं आज कुछ लोग अपनी मालदारी दिखलाने के लिये ईस तरह जियादा पाना पका कर ईस को बजाए ईस के, के पुरजा, कुकरा में बांट दें ईसे क्यरे के डिब्बे में डालना बेहतर जानते हैं येह निहायत पराब और नाजाईज काम है. और माल को ज़ाअेअ करना है. अेक अेक दाने का हिसाब देना होगा अलबत्ता जे लोग ईस ई'ले शनीअ (बुरे काम) को गुनाह नहीं समजते उन का हुक्म येह के अगर गुनाह नस्से कतई से साबित हो और ईस का करने वाला गुनाह न जाने तो हुकडा के नजदीक उस पर हुकमे कुर्फ आईद होगा अगर हिल में येह पयाल हो के बहुत बणा गुनाह है और शैतान के बहकावे में आ कर कर बैठे तो ईस सूरत में ईमान नहीं जाता अलबत्ता गुनाहे कबीरा का मुर्तकिब होगा और अगर ईस्तिहज़ा (मज़क) व ईस्तिहज़ाफ़न (शर्मिन्दा) करता है तो ईमान की सलामती का खतरा है. चुनान्थे,

शई किक्डे अकबर में है :

ان استحلال المعصية اذا اثبت كونها معصية بدلالة قطعيه وكذالاستهانة بها كافر بان يعدها هنية سهلة ويرتكبها من غير مبالاة بها ويجرىها مجرى المباحات في

ارتكابهاوكذا الاستهزاءعلى الشريعة الغراءكفر لان ذالك من امارات تكذيب الا

نبياء عليهم السلام (شرح فقه اكبر ملا على قارى)

और येह बात कुरआन से साबित है के तज्जीर व ईसराफ़ माल में हराम है लिहाजा जो शप्स हाज्ज हो कर या कोई भी ऐसा करे तो उस पर तौबा लाजिम है.

मौला अली رضي الله تعالى عنه फ़रमाते हैं के सभ से बणा गुनाह येह है के उस का करने वाला उसे हलका जाने. **اشد الذنوب ما استهان صاحبه**

सुवाल (11) : बहुत सारे लोग मानते हैं के सजिदी हक पर है ईस लिअे तो हुकूमत उन की है और हरम का ईन्तिजाम उन के हाथों में है और उन के पीछे नमाज पढ लेते हैं और उन के बयान भी सुनते हैं और जाते वक्त बिगण कर जाते हैं, इन के लिअे दुआओं करते हैं उन को क्या जवाब दिया जाअे.

अल जवाब (11) : सुवाल नम्बर 7 में सजिदियों के अकीदे पर मुप्तसर लिखा है. और येह बात जेइन् नशीन रहे के **ان الاسلام يعطو ولا يعطى** ईस्लाम अपनी हक्कानियत की बुन्याद पर सर बुलन्द है. वोह किसी का मोहताज नहीं सारे लोग ईस के हक और सय होने की वजह से ईस के मोहताज हैं. रहा येह कहना के उन की हुकूमत है ईस लिअे वोह हक पर है गलत है भर वक्त हिन्दुस्तान पर मोदी हुकूमत में है तो क्या येह कहना दुरुस्त होगा के उस का हुत परस्ती करना दुरुस्त है ? और आगे बढ़ कर तारीफे मक्का पर नजर डालें अबू जहल, अबू लहब वगैरा सरदारै मक्का और हरमे पाक के रहने वाले और रजवाले थे तो क्या उन्हें भी कहेंगे के वोह हक पर थे. हरगिज नहीं ईस्लाम को पहचानने का मे'यार हुकूमतें नहीं है बल्के कुरआनो हदीस है अगर कुरआनो हदीस के मे'यार पर जरा है तो हाकिम क्या गरीब महकूम वोडी

मुसलमान है. दर अस्ल आले सउिद के शैख मुहम्मद बिन अब्दुल वद्दाब नजदी ने जो इरौगे तौडीद का मिशन यलाया था इस की आण में उस ने शानेरिसालत में गुस्ताफी को ज़ाँक ठहराया. येही वजह है के उस ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को मजबूर मडक कडा. अताई गैब का इन्कार किया भीलादे मुस्तफा मनाना शिर्के जली लिफा हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के कब्रे अन्वर को सनमे अकबर (बणा बुत) लिफा सहाबा और उम्मुल मोमिनीन के कब्रों पर से कुब्बो को ढा दिया उता के कब्रों के निशानात पत्म करा दिये. मज़ारात की ज़ियारत व तबर्कुकात से इस्तिफादा (इाईदा हासिल) करना शिर्क लिफा येह वोह तमाम अकाईदे वहाबिया हैं जिस का बानी मुहम्मद बिन अब्दुल वद्दाब नजदी है. जिस ने अनियह से तहरीके तौडीद के नाम से मिशन यलाया और जब इस के खिलाफ़ उलमाओ सादिदीन ने तआकुब किया तो भाग कर दरइय्या में पनाह ली और मुहम्मद बिन सउिद से मुआहदा किया और आले सउिद ने मुहम्मद बिन अब्दुल वद्दाब के मिशन को हुकूमती सत्ह पर इसे इरौग दिया जो आज तक यला आ रहा है. मज़ीद मा'लूमात के लिओ तारीफे नजदो डिजाक का मुतालआ करें. लिहाजा तमाम ओहले सुन्नत न इन के पीछे नमाक पढ़ें न इन के बयानात सुनें. और न इन के लिओ दुआओं करें बल्के येह दुआ करें के मौला तेरे प्यारे उबीब का प्यारा यमन क्या बर भादबे ईलाही निकले येह नजदी बला मदीने से.

(अक मुक्तिये आ'जम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ)

सुवाल (12) : क्या उजजे बदल की तरह उमरओ बदल कर सकते है ?

अल जवाब (12) : ओक मर्तबा लकीत बिन आमिर ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से सुवाल किया के मेरा बाप बूढा है उज की

ताकत नहीं रखता और न ही उमरु कर सकता है और न ही अंत पर सुवार हो सकता है उन के लिये क्या हुकम है ? इस पर हुजूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم ने इरमाया के अपने बाप की तरफ से उज और उमरु अदा करो ! मजकूर रिवायत से साबित हुवा के उज्जे बदल की तरह उमरुे बदल भी किया जा सकता है. अलबत्ता इस बात का ખयाल जरूर रहे के जिस की तरफ से बदल किया जा रहा है अहराम बांधते वक्त उस का नाम जरूर ले और निख्यत करे. दर अस्ल उज्जे बदल हो या उमरुे बदल येह अेक तौर से नवाझिल व सदकात कर के इसाले सवाब करना है जो शरुे मुतइहरा ने इस पर कोई पाबन्दी नहीं लगाई है बिलाशुबा जाईज है.

सुवाल (13) : आबे जमजम के बारे में येह मशहूर है के अेक लीटर या इस से भी जियादा सादे पानी में अगर अेक कतरा भी जमजम मिला दे तो वोह सारा पानी जमजम बन जाता है या'नी के सादे पानी में जमजम की तासीर आ जाती है और अब इस पानी से भी वोह सभ इाईदे हासिल होते है, क्या येह सय है ?

अल जवाब (13) : आबे जमजम को आम पानी के जियादा मिकदार में मिला देने से उस पानी में जमजम की बरकत और इजीलत मुत्तकिल हो जाती है लिहाजा इसे भी आबे जमजम कहा जा सकता है. युनान्चे, इिकडे इस्लामी की किताबों में है.

तर्जमा : किसी ने कसम खाई के जमजम के पानी के घणे से कुछ भी नहीं पियूंगा इस के बा'द उस घणे में दूसरा पानी डाल दिया और न पानी गाबिब हुवा जमजम मग्लूब हो गया इमाम मुहम्मद के नजदीक हानिस (कसम तोणने वाला) हो जायेगा.

إذا حلف على قدر من ماء زمزم لا يشرب منه شيئا وصبه في ماء آخر حتى صار مغلوبا وشرب منه يحنث عند محمد رحمة الله

मा'लूम हुवा के आबे जमजम तले ही मिक्दार में कम हो मगर पानी इस कदर हो के इस में मुकम्मल मिल जाये तो वोह भी इस के हुक्म में है और सारे आदाब जमजम ही की तरह बजा लाना होगा मसलन जणे हो कर पीना तीन सांस में पीना. किब्ला रुख पीना वगैरा इस की अस्ल उदीसे पाक में मौजूद है.

عن طلق بن علي رضي الله عنه قال خرجنا و فدا الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فبايعناه و صلينا و اخبرنا ان بارضنا بيعة لنا فاستوهبنا من فضل طهوره فدعا بماء فتوضأ و تمضمض ثم صبه لنا في ادواة و أمرنا فقال اخرجوا فاذا تيمم ارضكم فاكسروا بيعتكم و انضحوا مكانها بهذا الماء و اتخذوا لها مسجداً قلنا ان البلد ابعيد و الحر شديد و الماء ينشف فقال مدوه من الماء فانه لا يزيد الا طيبا. (رواه النسائي)

उज्जरेते तलक बिन अली से मरवी है के एन्हों ने कहा :
 हम एक वक़्त की शकल में निकले हुजूर ﷺ के पास तो हम सब ने हुजूर की बैअत कुबूल और एन के साथ नमाज़ अदा की और हम ने हुजूर ﷺ को मुतलअ किया के हमारी सर जमीन पर अक गिरजा घर है और हम सब उस को आप के वुजू के जये हुये पानी से साफ़ कर के डिबा करना चाहते हैं. तो हुजूर ﷺ ने पानी मंगाया और वुजू किया फिर कुल्ली की और हमारे बरतन में डाल दिया और हुक्म दिया के जाओ और जब तुम अपनी सर जमीन पर पहुँचो तो अपना गिरजा घर तोण उलो और उस की जगह येह पानी बहा दो और उस जगह मस्जिद बना उलो. हम ने अर्ज की या रसूलल्लाह ! शहर दूर है गरमी शदीद है वहां पहुँचने तक पानी ખુश्क हो जायेगा. तो हुजूर ﷺ ने इरमाया के पानी में एजाफ़ा कर लो क्यूंके - जिस को तुम जियादा करोगे सब पाकीजा ही होगा.

મા'લૂમ હુવા કે હુઝૂર ﷺ કે બચે હુએ પાની મેં દૂસરા પાની મિલ જાએ તો ઉસ કા ભી હુકમ વોહી હૈ ઇસી તરહ ઝમઝમ મેં અગર દૂસરા પાની મિલ જાએ તો ઉસ કા ભી હુકમ વોહી હોગા. લિહાઝા સારે આદાબ આબે ઝમઝમ કે બજા લાને હોંગે.

સુવાલ (14) : નમાઝ કા વક્ત હો ગયા તો ચલતે જહાઝ મેં નમાઝ અદા કર લી સિમ્ત કા પતા ન થા અબ ક્યા ઉસ નમાઝ કો દોહરાના ઝરૂરી ?

અલ જવાબ (14) : ચલતે જહાઝ મેં નમાઝ કા વક્ત આ જાએ ઓર બા વુઝૂ હો કર સિમ્તે કિબ્લા રુખ કર કે નમાઝ અદા કર લે તો નમાઝ હો જાએગી. અલબત્તા જહાઝ મેં નમાઝ સીટ સે અલાહિદા હો કર કિસી ખાલી જગહ પર કિયામ ઓર સજદા ઓર રુકૂઅ કે સાથ અદા કી જાએ તો બા'દ મેં ઝમીન પર ઉતરને કે બા'દ દોબારા પઢના લાઝિમ નહીં હોગા વોહ નમાઝ કાફી હોગી ઓર કિસી ખાલી જગહ પર કિયામ, રુકૂઅ ઓર સજદે કે સાથ અદા નહીં કી બલકે સીટ પર બૈઠે બૈઠે ઇશારે સે રુકૂઅ ઓર સજદા કર કે પઢા તો જહાઝ સે ઉતરને કે બા'દ ફર્ઝ કો દોબારા પઢના લાઝિમ હોગા.

સુવાલ (15) : ઓરતોં કી એક નઈ બાત યેહ સુની ગઈ કે બાઝાર સે નએ દૂપટ્ટે ખરીદ કર હરમ મેં મુસલ્લે કી જગહ બિછા કર ઉસ પર નમાઝ પઢે તો જિસ ઓરત કો બચ્ચે નહીં હોતે હૈં ઉસ કો બચ્ચે હો જાતે હૈં ક્યા ઐસા અકીદા રખના ગુનાહ નહીં હૈ ? ઓર જો મર્દ હઝરાત અપની ઓરતોં કો ઐસે કામોં સે નહીં રોકતે વોહ ક્યા ઇસ ગુનાહ મેં શામિલ નહીં હૈં ?

અલ જવાબ (15) : કિસી ઓરત કો બચ્ચા પૈદા હોના ન હોના યેહ સબ તકદીરે ઇલાહી સે હૈં. યુનાન્થે, અલ્લાહ પાક ને હઝરતે આદમ

عَلَيْهِ السَّلَام को बे मां और बाप के पैदा किया और उजरते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को बे बाप के पैदा इरमाया येह सभ अल्लाह की कुदरते कामिला है वोह जिस तरह याहे दुन्या में पैदा करना वोह मुसब्बिबुल अस्बाब है जरीआ बना देता है तो अद्वैतनासुल के लिअे मई व औरत को सभल बनाया आज पूरी बनी नौअ ईन्सान ईसी तरह से जरी व सारी है इन में से किसी को साहिबे औलाद बनाया किसी को बे औलाद ही रखा औरतों में किसी को जरभैज बनाया किसी को बांज रखा इन के अन्दर बय्या पैदा करने की सलाहियत ही न रपी. लिहाजा औरतों का येह समजना गलत है इस दरे का'बा की बरकत से ही रब तआला अता कर सकता है क्या हरम की सरजमीन से बढ कर बाजार का कपणा मुत्बर्क डोगा ? बिलाशुबा औसा अकीदा रपना गुनाह है इस से उन्हें रोका जाये इन के शौहरो पर भी जररी है के उन्हें इस वडमी अकीदे से मन्अ करें.

والله الموفق وهو المستعان

सुवाल (16) : अस्र के बा'द तवाइ की वाजिब नमाज का हुकम क्या है ? क्या नमाज पढी जाये ?

अल जवाब (16) : उनही मसलक में अस्र के बा'द तवाइ की दो रकअत पढना जाईज नही. वोह ईतना तवक्कुइ (रुक जाया) करे के मगरिब का वक्त आ जाये फिर मगरिब की नमाज पढ कर वोह दो रकअत पढे इस के बा'द सई करे इस के बा'द बाल कटवाये.

قال الحصكفي وكره تحريم الصلاة مطلقا ولو قضاء او واجبة او نفل مع شروط

واستواء وغروب (در مختار مع رد المختار وكذا في في الهنديه)

सुवाल (17) : ईमाम यकीनी अहले उदीस डो तो हरम की अजान, ईनाम की किराअत, नमाजे जनाजा वगैरा का हुकम क्या है ?

अल जवाब (17) : उजरते पुजैमा बिन यमान बयान करते हैं के अेक मरतबा नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया के मुजे उम्मत

पर जैसे शप्स का पौफ है जो कुरआन पढेगा उस का रंग अपनायेगा
 इस्लाम की यादर औढेगा फिर वोड इस्लाम को पसे पुशत डाल देगा और
 मुसलमान पर तलवार ले अढ दौणेगा और मुसलमान को मुश्रिक कहेगा
 मैंने अर्ज किया औ अल्लाह के नबी ! मुश्रिक कौन डोगा ? इरमाया वोड
 षुढ मुश्रिक डोगा. (तइसीरे इब्ने कसीर, सूरअे आ'राइ आयत. 176)

मा'लूम हुवा के सभ कुछ मुसलमान की तरड डोने के ढा वुजूढ
 मुसलमान नडीं इसी तरड उन अेडले डदीस लोगों का डाल जो मुहम्मड
 बिन अब्दुल वड्डाब नजदी के पैरुकार हैं और उस के अकीडे पर
 मुत्तइक हैं. जिस ने अपने डम अकीडा मुसलमानों के इलावा तमाम
 मुसलमानों को मुश्रिक गरदाना (समजा) और इन के क्तल को मुढाड व
 ज़ा'ल जाना हुजुरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शान में गुस्ताबियां की.
 लिडाजा इस का हुक्म वोडी है जो डरते षुजैमा बिन यमान की डदीस
 से साबित है के तमाम मुसलमानों को काइर कहे वोड षुढ काइर है उस
 की नमाज नमाज नडीं. अजान, किराअत नमाजे जनाजा वगैरा सभ
 डेकार है.

सुवाल (18) : औरतों की नमाज इम में डेडतर है या डरम में ?

अल जवाब (18) : डरते अबू हुमैड सा'दी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की
 अडलिया ने रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से अर्ज की, के औ अल्लाह के
 रसूल ! मुजे आप के साथ नमाज अडा करना मडबूब है तो हुजुर
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया के मुजे मा'लूम है के तुम्हें मेरे साथ नमाज
 अडा करना मडबूब है लेकिन तुम्हारा घर की कोठरी में नमाज अडा
 करना घर के सेडन में नमाज अडा करने से डेडतर है और घर में नमाज
 अडा करना मडल्ले की किसी मस्जिड में नमाज अडा करने से डेडतर है
 और मडल्ले की मस्जिड में नमाज अडा करना मेरी मस्जिड में नमाज
 अडा करने से डेडतर है. युनान्ये, इमाम हुमैड सा'दिय्या رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के

लिअे घर के अन्दरुनी कोठरी में नमाज की जगह बनाई गई जहां वोह नमाज पढती रहीं यहां तक के अल्लाह को प्यारी हो गई.

अलबत्ता अगर किसी वक्त भवातीन तवाफ़ की गरज से बैतुल्लाह शरीफ़ को देखने के लिअे मस्जिद हाराम में या हुजूर पर दुरदो सलाम पढने के लिअे मस्जिद नबवी में आई और वहां नमाज या तरावीह की जमाअत हो रही हो तो वोह वहां जमाअत में शरीक हो सकती हैं. लेकिन येह जरूरी है के वोह भवातीन की मप्सूस जगह में नमाज अदा करें. मस्जिद में मर्दों के दरमियान भणी न हों.

सुवाल (19) : क्या शाफ़ेई ईमाम के पीछे उनई मुक्तदी की नमाज हो जायेगी ? वोह सर का मस्ह नही करते.

अल जवाब (19) : उनई की नमाज शाफ़ेई ईमाम के पीछे उस वक्त सहीह है जब वोह हमारे मजहब की रियायत करता हो और इप्तिदाफ़ की जगहों से बयता हो बाई तौर के सबीलैन के इलावा से भी अगर नजिस थीज निकले तो पुजू कर ले माअे मुस्ता'मल से पुजू न करे और न अैसे ठहरे कलील पानी से पुजू करे जिस में नजसत पण गई हो. युनान्थे इतावा हिन्दिथ्या में है.

والاقتداء بشافعي المذهب انما يصح اذ كان الامام يتحامي مواضع الخلاف بان يتوضأ في الماء الراكد القليل ولا بالماء المستعمل

ईसी तरह इतावा कैरुरसूल में है के अगर शाफ़ेई ने अैसा काम किया जो हमारे मजहब के मुताबिक पुजू तोणने वाला है या नमाज को इंसिद करने वाला है. जैसे के मुंड भर के होने या गैर सबीलैन से पून वगैरा निकल कर बहने के बा'द पुजू न किया या माअे मुस्ताअमल से पुजू किया या पुजू में थौथाई सर से कम मस्ह किया साहिबे तरतीब हो कर याद होते हुअे और वक्त में वुस्अत के बा पुजूह कजा नमाज पढे बिगैर वक्ती नमाज शुअअ कर दी या कोई इर्ज अेक बार पढ कर इर उसी

नमाज की इमामत कर रहा हो तो ऐसे शाइएँ इमाम की इकतिदा में उनइयों की नमाज दुरुस्त नहीं. अब बात येह है के दोनों उरम के इमाम शाइएँ मस्लक वाले हैं जो चौथाई सर का मस्ल नहीं करते दिहाजा उरम के इमाम के पीछे उमारी नमाज नहीं होगी.

सुवाल (20) : नमाज के वक्त में इर्क पास कर के वहाबिय्या अस्र को जोहर के वक्त अदा करते हैं क्या येह सहीह है ?

अल जवाब (20) : दो नमाजों को इकठा अदा करने के बारे में दो सूरतें हैं अक को जम्मे उकीकी कहते हैं. या'नी दो नमाजों को अक वक्त में अदा करना और दूसरी सूरत को जम्मे सूरी कहते हैं या'नी अक नमाज को मुअप्पर (ताप्पिर) कर के उस के आप्पिरी वक्त में अदा करना. और दूसरी नमाज उस के शुर्अ वक्त में अदा करना. तो दोनों नमाजें अपने अपने वक्त में अदा हुँ. मगर सूरतन हुँ दोनों के दरमियान जम्मे पाया जा रहा है क्यूंके न जाहिर दोनों अक साथ अदा हुँ. अहनाइ के नजदीक कुरआनो उदीस की रौशनी में जम्मे उकीकी सिर्इ अरफात व मुजदलिफा में जाँज है वोह भी सिर्इ दो नमाजों को जोहर और अस्र और मगरिब व ईशा में और सिर्इ हाजियों के दिअे शराईत के साथ. इन के इलावा किसी भी मौकअ पर जम्मे बैनस्सलात उकीकी जाँज नहीं. उदीसे पाक में है :

كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يصلي الصلوة لوقتها الا بجمع و عرفات
और कुरआने पाक में भी ताकीद आई है.

ان الصلوة كانت على المومنين كتابا موقوتا

नमाज मोमीन पर अपने मुकर्ररा वक्तों में अदा करना इर्ज है. अबलता जरुरते वक्त के जम्मे सूरी जाँज है. जैसा के उजरते आईशा सइर में जोहर को मुअप्पर करते थे और अस्र को मुकदम करते थे. और मगरिब को

मुअप्पर करते और एशा को मुकदम करते. एन के एलावा तमाम अहादीस जिन में दो नमाओं को जम्अ करने की बात है वोह सभ जम्अे सूरी पर मउमूल है.

दुरे मुप्तार में है :

لا جمع بين فرضين في وقت بعد سفر ومطر خلافاً للشافعي ومارواه محمول
على الجمع الصوري فعلاً لا وقتاً فان جمع فسد لو قدم الفرض على وقته وحرماً لو
عكس أي اخره عنه وان صح الاحتاج بعرفة ومزدلفة

लिहाजा उनई मसलक के मानने वालों पर एसी की तकलीद वाजिब है अलबत्ता सउदिहिया में यूंके कसरत से उम्बली हैं और एमाम अहमद बिन उम्बल के नजदीक सफ़र वगैरा नमाओं को ओक वक्त में पढने की गुन्जाएश है. मगर अहनाफ़ के यहां हरगिज नहीं है. लिहाजा हम नमाजे अस्र उन के वक्त में न पढे.

सुवाल (21) : जकात ले कर उज को जाना कैसा है ? क्या उन को जकात देने वाला गुनहगार है ?

अल जवाब (21) : जकात के मुस्तहिक को ऐसी रुकूम (रकम की जम्अ) को मालिकाना कब्जे के तौर पर दे दी जाये और वोह एस रकम से उज करे तो बिलाशुबा जाईज है. अलबत्ता सदकते नाफ़िला के जरीअे लोगों-को उज कराया जा सकता है. जकात लेने वाला अगर मुस्तहिक है तो देने वाला गुनहगार नहीं बल्के वोह अज का मुस्तहिक हीगा.

(هكذا في الدر المختار)

सुवाल (22) : कर्ज अदा न करने वाले के उज का क्या हुकम है ?

अल जवाब (22) : अगर कोई शप्स मकड़ुज या'नी उस के जिम्मे कर्ज है या किसी दूसरे का माली उक है तो उसे याहिये के अव्वलन कर्ज या दूसरे का माली उक अदा करे फिर उज को जाये. येही उस के लिअे बेहतर है लेकिन अगर वोह कर्ज अदा किये बिगैर भी उज कर लेता है

तब भी उस का हज सहीह व अदा हो जायेगा. अलबत्ता ऐसा करना शरअन मकरुह है. यूनान्चे,

इतावा काजी खान में है :

وان كان في ماله وفاء بالدين يقضى الدين ولا يحج ويكره الخروج الى الغزو
والحج لمن عليه الدين

सुवाल (23) : मदीने में इमाम पीछे और मुक्तदी आगे, येह कैसी नमाज ?

अल जवाब (23) : मजहबे हनफी में मस्जिदा येही है के मस्जिदे हराम में जो मुक्तदी इमाम की जहत (सिमत, जगह) में इमाम से आगे भजे होंगे उन की नमाज नहीं होगी क्यूंके बा जमाअत नमाज में इक्तिदा सहीह होने के लिअे येह लाजिम है के मुक्तदी इमाम से आगे न भडे.

अहुररुईक में है.

لان من المعلوم ان من تقدم على امامه فسدت صلاته

(هكذا في الدر والرد وفي فتاوى الهند)

सुवाल (24) : वादिये मुहस्सर कैसे पता चले ?

अल जवाब (24) : वादिये मुहस्सर अक ऐसी जगह है जो मिना और मुजदलिफा के दरमियान उद्दे फासिल है. वोह दोनो में से किसी का हिस्सा नहीं और सिवाअे वादिये मुहस्सर के अरफात के बा'द हरम शुरुअ हो जाता है. मुहस्सर न तो मशअरुल हराम, शअरुल हराम न मुजदलिफा और न ही मिना का हिस्सा है. याद रहे के येह वोही जगह है के हाकिमे यमन अबरहा लश्करे अजमी ले कर जिस में हाथी भी थे खानअे का'बा को मुन्डहिम (तोणने, मिस्मार) करने के लिअे यठ आया था. जब वादिये मुहस्सर में पहुंचा तो समुन्दर की तरफ से कुछ परिन्दे आअे उन के पन्जों में और योंयों में मसूर और यने के

बराबर कंकरियां थीं उन्हीं ने अबरु के लश्कर पर बरसाना शुरू किया येह कंकरियां बन्दूक की गोली से कम नहीं थीं सब को उलाक कर के रभ दिया और भाग गये और बा'द में बणी तकलीकें उठा कर मर गये. इसी लिये इस जगह को अजाबे एलाही के नुजूल के सबब हरम में नहीं शामिल किया गया और इस जगह से जल्दी गुजर जाने का हुक्म है. मा'लूम हुवा के अजाबे एलाही जिस जगह नाजिल हुवा हो. वहां ठहरना नहीं चाहिये.

सुवाल (25) : हाथ में ખુले ચપ્પલ રખ કર રોઝએ રસૂલ પર હાઝિરી દેના કેસા હૈ ?

અલ જવાબ (25) : રોઝએ રસૂલ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ પર સલામ પેશ કરને કે લિએ હાઝિર હોને का तअल्लुक बाबे ईशक से है. और हर उम्मती का सलाम पेश करने का हुक है. अलबत्ता आदाब की रिआयत करना लाजिम है कोई ऐसा काम न करे जिस से बे अदबी का शाअेबा हो. और हाथ में ખુले ચપ્પલ લે કર હાઝિર હોના येह आदाब के ખिलाफ है लिहाजा किसी जगह रभ कर भा वुजू भा अदब दाहिना (सीधा) पाઉं पहले दाખिल करते हुअे सर रुकाअे हुअे दुइदो सलाम का नजराना लभों पर सज्जअे हुअे बारगाडे आलिया में हाजिरी का शरफ हासिल करे.

(والله الموفق وهو المستعان)

सुवाल (26) : मक्के में गीबत योक है जहां अेक दूसरे की बुराई करने की ખાસ જગહ હૈ.

અલ જવાબ (26) : અલ્લાહ તબારક વ તઆલા ને સર ઝમીને મક્કા કો બલદે અમીન (અમ્ન કા શહર) ફરમાયા હૈ બરકત વાલી જગહ કા નામ મક્કા હૈ અલબત્તા ઝમાનએ જાહિલિયત મેં શુઅરાએ અરબ અેક દૂસરે કી હિજૂ (બુરાઈ) કરતે થે હો સકતા હૈ ઉન્હોં ને કિસી જગહ કો ઈસ કે લિએ ઉસ વક્ત મખ્સૂસ કર રખા હો જિસે ગીબત ચોક કહા જાતા

हो लेकिन इस्लाम की आमद (आने) और गल्बे के बा'द पूरा भित्तअे मक्का गलवारअे इल्मो छिक्मत बन गया.

सुवाल (27) : मदीने में डोनेशन लिखवाअे और इन्डिया में पेमेन्ट करे तो कितना सवाब ?

अल जवाब (27) : सवाब का दारो मदार निय्यत पर मौकूफ़ (ठहरा हुवा) है उदीसे पाक में है "انما الاعمال بالنيات" आ'माला का दारो मदार निय्यत पर मौकूफ़ (ठहरा हुवा) है अगर मदीने में कोई नेकी करने पर पयास उजार सवाब मिलता है और इस निय्यत से उस ने मदीने में किसी नेक काम में डोनेशन किया और किसी वजह से न अदा कर सका इन्डिया में पेमेन्ट किया तो उस के हुस्ने निय्यत (अख़ी निय्यत) की बुन्याद पर सवाब मदीनेअे मुनव्वरा ही का मिलेगा **انشاء الله تعالى** क्यूंके निय्यत कइते हैं दिल के पक्के इरादे को. जो भी हम काम करेंगे उस में निय्यत की अख़ाई व बुराई देभी जाअेगी. अल्लाह की बारगाह में निय्यत के अतिबार से ही सजा व जजा का फैसला होगा. उदीसे पाक में "نية المومن خير من عمله" मोमिन की निय्यत उस के अमल से बेहतर है. दूसरी उदीसे पाक में है के बन्दे बहुत से नेक आ'माल को अन्जाम देता है फिरिश्ते उस को आस्मान की तरफ़ ले जाते हैं फिर अल्लाह तआला इरमाता है के इन आ'माल को उस के नामअे आ'माल से निकाल दो क्यूंके उस ने येह काम मेरी पुश्नूदी के लिअे नहीं किया है और हां हां कुलां कुलां आ'माल उन के नामअे आ'माल में दर्ज कर दो. फिरिश्ते अर्ज करेंगे इलाहल आलमीन उस बन्दे ने तो येह काम किये नहीं तब अल्लाह तआला इरशाद इरमाअेगा के उस ने दिल में इन कामों को करने की पुप्ता निय्यत की थी. मा'लूमा हुवा के मदीनेअे मुनव्वरा में पुप्ता इरादे से अगर इमदाद की थी तो तले ही हिन्दुस्तान में अदा करे उसे मदीना शरीफ़ का सवाब मिलेगा. **سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ**

सुवाल (28) : मस्जिदे कुबा में 2 रकअत नईल अदा करने पर अक उमरु का सवाल है, क्या अगर अक ही रकअत में अक आदमी 10 रकअत पढ़ें तो उसे पांच उमरु का सवाल मिलेगा ? या हर बार अलग अलग जा कर 2 / 2 रकअत पढ़नी पड़ेगी ?

अल जवाब (28) : हुजूर नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का मुबारक एरशाद है के मस्जिदे कुबा में दो रकअत नमाज पढ़ने का सवाल अक उमरु के सवाल के बराबर है. और दूसरी हदीस में है के जो शप्स घर में पुजू कर के मस्जिदे कुबा आये और दो रकअत नमाज अदा करे तो उस को उमरु का सवाल मिलेगा और नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पुसूसन हफ्ते के दिन मस्जिदे कुबा तशरीफ ला कर नईल नमाज पढ़ते थे. ये तशरीफ आवरी कभी पैदल होती और कभी सुवारी पर होती थी. लिहाजा बेहतर येही है के मदीने में जहां कियाम हो वही से जा पुजू हो कर मस्जिदे कुबा जायें और वहां जा कर नमाज पढ़ने का अहतिमाम करें. युनान्हे, हदीसे पाक की एभारत कुछ यूँ हैं मुलाहाजा इरमायें.

كان النبي صلى الله عليه وسلم يأتي مسجد قباء كل سبت ماشيا وراكبا (ترمذی)
 عن النبي صلى الله عليه وسلم قال الصلاة في مسجد قباء كعمرة قال رسول الله
 صلى الله عليه وسلم من تطهر في بيته ثم أتى مسجد قباء فصلى فيه صلاة كان له
 كأجر عمرة (ابن ماجه)

मा'लूम हुवा के हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की आदते करीमा से साबित हुवा के जा पुजू घर से हो कर मस्जिदे कुबा जा कर दो रकअत नमाज अदा करने का सवाल अक उमरु के बराबर है.

सुवाल (29) : बहुत सारी औरतें और कुछ मर्द भी कबूतर के आगे से दाने उठा लेते हैं और ये कलते हैं के इस दाने को पिलाने से जिस औरत को औलाद नहीं उसे औलाद हो जाती है, क्या ये अकीदा

सही है ? या यह समझना गुनाह है ? दाने षिलाने से औलाह हो ही जायेगी यह मान लेना कैसा है ?

अल जवाब (29) : अक मरतबा हजरते सुलैमान عليه السلام ने तमाम परिन्दों को हुकम दिया के दरबार में हाजिर हो कर अपने अपने कमाल बयान करें. युनान्हे, सारे परिन्दे हाजिर हो कर अपने कमाल बयान करने लगे जब कबूतर की बारी आई तो उस ने कहा हुजूर मेरी परवाज बुलन्द है और कमाल यह है के मैं आस्मान की बुलन्दियों में उठने के बाद वुजूद जमीन की हर चीज देखता हूँ, कव्वा सुन कर बोला हुजूर यह झूट बोलता है अगर इतनी ही नजर तेज होती तो जब शिकारी उन्हें इंसाने के लिये दाना डाल कर जल में इंसाना याहता है तो उन्हें इतने करीब से जल क्यों नजर नहीं आती ? और यह जल में इंस जाते हैं. इस पर हजरते सुलैमान عليه السلام ने कहा के इस कव्वे का क्या जवाब है तुम्हारे पास ? कबूतर ने अर्ज किया या नबिय्यल्लाह ! नजर तो वाकेई मेरी ही तेज है मगर जल में इंसते वक्त मेरी नजर पर कमा व कदर का पर्दा पण जाता है. (कससुल अम्बिया) बस इतना जान लें के जानवर को दाना षिलाने से अज्जो सवाब मिलता है न के इन के आगे से दाना उठा कर फुद जाने से रही बात औलाह का होना तो इस का तअल्लुक तकदीर से है रहमते हक बहा न भी जूयद कबूतर का दाना उठा कर जाने से साहिबे औलाह होना मजहबे इस्लाम में इस की कोई अस्ल मुझे न मिली. अलबत्ता बुजुर्गों के तबर्क़ात और सदक़ात ज़रीअअे रहमते फुदावन्दी हैं.

नोट : कुछ उलमा ने यहां कव्वे के मुकाबले में कबूतर नहीं मगर हुदहुद लिखा है.

सुवाल (30) : हाज्ज कुरबानी कैसे करें ? क्या सउदी की बैंक में पैसे जम्अ करने से कुरबानी अदा हो जायेगी ?

अल जवाब (30) : बेहतर तरीका येह है के बेंक के बजाये पुद या किसी मो'तबर आदमी के तवस्सुत (वसीले) से कुरबानी करें.

सुवाल (31) : मस्जिदे कुबा और जबले उहुद हरम की उद में है या बाहर ?

अल जवाब (31) : हुदूदे हरम मदीने के बारे में हुकडा का धप्तिलाइ है मगर जमहूर का मजहब येही है के जबले सौर और जबले धर के दरमियान हरमे मदीना है.

मौला अली से मरवी है के حرم المدينة مابين ثورالى عير और धन्डी से दूसरी उदीस है. ان الحرم مابين لابتقى المدينة मुनव्वरा की दोनों जनिब की पथरीली जमीन के दरमियान डिस्से को हरम करार दिया गया है. और इस हरम से मुराद हरमे ता'जीमी है न के हम लाजिम होने के अतिबार से है और उजरते अबू हुरैरा قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم مابين لا بقیها حرام से मरवी है के मदीने के दोनों जनिब पथरीली जमीन के दरमियानी डिस्से को हरम करार दिया. जबले धर और जबले सौर के दरमियान तकरीबन 15 किलो मीटर का फासिला है. येह दोनों पहाण जुनूब और शुमाल में मदीने की उद हैं. युनान्थे मशिको मगरिब की जनिब हुदूद का तअय्युन करते हुअे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया के मैं मदीने के दोनों महल्लों धिरा शरकिया और धिरा गुरबिया के दरमियानी अलाके को हरम करार देता हूं. (सहीह मुस्लिम) और मस्जिदे कुबा और जबले उहुद धन के दरमियान नहीं आते हैं इस लिअे येह हुदूदे हरम मदीना से पारिज हैं.

नोट : लिहाजा अेक नेकी का 50,000 का जो वा'दा है वोह यहां नहीं है क्यूंके येह दोनों मकाम हुदूदे हरम से बाहर है. और येह भी जानना यादिये के जबले उहुद अगर हरम की उद में छोता तो हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ वहां कभी जंग (लगाई) न लणते.

सुवाल (32) : मदीने में रमजान में यंदे देने का अे'लान या'नी अहद किया और इन्डिया मे शव्वाल में पेमेन्ट किया तो क्या रमजान का सवाब मिलेगा ?

अल जवाब (32) : इस का जवाब मैं ने सुवाल नम्बर 2, में दे दिया था के "انما الاعمال بالنيات" आ'माल का दारो मदार निय्यत पर मौकूफ़ (ठहरा हुआ) है और "نية المومن خير من عمله" मोमिन की निय्यत उस के अमल से बेहतर है. येही वजह है के बन्दा जब कोई नेकी का पुप्ता इरादा कर लेता है तो नेकी लिखने का इरिश्ता उसे इौरन लिख लेता है अब अगर रमजान में यन्दा देने का अे'लान कर दिया तो भले ही वोह शव्वाल में और इन्डिया में अदा करे उस को रमजान का सवाब मिलेगा.

सुवाल (33) : क्या जुम्आ काईम करने के लिअे कुछ शरत है ? देखा येह गया की कई जगह होटल के कमरे में नमाजे जुम्आ अदा की गई, जो खुद पारिष्ठा (या'नी मदीना या मक्का से बाहर का रहने वाला है) 10 दिन के लिअे मदीना आया है और जो शरई मुसाफिर है, जिस पर खुद जुम्आ वाजिब नहीं, उस ने झुत्बा दिया, और उस के पीछे थोड़े लोगों ने नमाज अदा की. और येह के नमाजे ईद भी होटल के कमरे मे पढी जाती है, क्या उन की नमाज होगी ? इस से पहले येह भी देखा गया के हजाराों की ता'दाद में औरतें जो नमाजे पंजगाना और नमाजे जनाजा तो हरम के इमाम के पीछे अदा करती थीं वोह औरतें भी होटल से निकल कर नमाजे जुम्आ और नमाजे ईद भी जमाअत से अदा करती हैं. और यहां तक के सड़ बन जाने पर रोड पर इमाम के आगे नमाज अदा करती हैं. और न उन के शौहर न कोई दूसरा उन को रोकता है इतने पीर व बाबा और मुफ्ती, मौलवी हज व उमरह के लिअे आते हैं मगर वोह भी युप याप तमाशा देपते हैं पीछे मस्जिद, पीछे इमाम

और आगे मुक्तदी. ईमाम के पीछे मुक्तदी ईमाम के आगे मुक्तदी ! शरअ में इन सब का क्या हुकम है ?

अल जवाब (33) : अरब इतिथ्यत जुम्मा में किसी को कलाम नहीं वोह नस्से कतई से साबित है और वोह आ'ला ज़रूरियाते दीन से है. मगर सिद्धते जुम्मा के लिये शराईत ज़रूर हैं. जिन में शहर का होना भी है और येह भी है के नमाजे जुम्मा व ईद की ईमामत हर कोई नहीं कर सकता इस के लिये शर्त है के ईमाम पुढ सुल्ताने ईस्लाम हो या ईस का नाईब या ईस का माज़ून (ईजाज़त याइता) हो और येह न हों तो ब ज़रूरत जिसे आम मुसलमानों ने ईमामते जुम्मा के लिये मुकर्रर किया हो. जाहिर है के अक मस्जिद में अक नमाज़ के लिये दो शप्स ईमाम मुकर्रर नहीं होते तो जो इन में मुकर्रर नहीं उस की और उस के पीछे वालों की नमाज़ न होगी. (कافی الدرر المختار و هكذا في فتاوى الرضويين)

रही बात होटल व कमरे, इलेट वगैरा में नमाजे जुम्मा का काईम करना तो येह आम-हालात में बिलाशुबा सहीह नहीं बल्के मक़ूह है मस्जिद के ईलावा इलेटों और घरों में आम हालात में जुम्मा का कियाम सहीह नहीं बल्के मक़ूह है (क्यूंके मस्जिद के ईलावा इलेटों और घरों में आम हालात में जुम्मा का कियाम सहीह नहीं है. (इतावा मर्कजे तरतीबे ईइता) इस के बदले जोहर पढ़ें. अलबत्ता पुजूबे जुम्मा की शराईत पाये जाने की शकल में अगर मस्जिद न हो या वहां जुम्मा पढने की मुमानअत (मन्अ किया) हो वगैरा तो किसी कमरे और होल व मैदान में नमाजे जुम्मा अदा करना ज़ाईज है. क्यूंके मस्जिद का होना बुन्यादी शर्त नहीं है.

बुन्यादी शराईत छे हैं : (1) शहर (2) वकते जोहर (3) पुत्बा (4) जमाअत (5) ईज़ने आम (6) जहां शहरी ईन्तिजामिय्या हो.

औरतों का नमाजे जुम्हा के लिये निकलना सही नही है औरतों की नमाज अपने कमरे में मस्जिद में नमाज पढने से अझल है. मुक्तदी अगर एमाम के आगे हो कर नमाज अदा करता है तो उस की नमाज नही होगी जो लोग मसाईल से वाकिफ नही हैं उन को एन तमाम मसाईल से वाकिफ कराना याहिये पीर हो या मुफ्ती व मौलाना व मौलवी. अत्र बिल मा'रुफ सभ का इरीजा है.

सुवाल (34) : एस बार पहली बार ऐसा हुवा के सउदी गवर्मेन्ट ने ऐसा कानून बनाया के सिर्फ वोही हाजि जिस ने अहराम पहना है, बस वोही हाजि नीये ग्राउन्ड इलोर पर का'बे का तवाफ करे, बाकी सारे हाजि इस्ट इलोर या सेकन्ड इलोर पर तवाफ करे, अब देखा येह गया के लोग लम्बे लम्बे यक्कर से बनने के लिये ખાલી ખાલી अहराम लपेट कर आ गये न मस्जिदे आईशा और न ही जिहराना गये और न ही किसी भीकत से अहराम पोश हो कर आये हैं. वोह सिर्फ एस लिये लपेटा के हरम के कारकुन उन्हें मोहरिम समजे और ग्राउन्ड इलोर पर जा कर आराम से तवाफ करें. क्या येह धोका नही है ? येह झूट और गुनाह नही है ? क्या ऐसा करना जाईज है ?

अल जवाब (34) : बिलाशुबा येह हरम के कारकुन के साथ धोका है और येह गुनाह है वोह भी जानये का'बा में के अक गुनाह भी अक लाभ गुनाह के बराबर है. हुजुरे अकरम ﷺ ने इरमाया "من غشنا فليس منا" जो हमें धोका दे तो वोह हम में से नही. सिर्फ आसानी के लिये बिगैर उजुरे शरई ऐसा करना गुनाह है. अलबत्ता अगर जरूरत मुतलकिक (साबित शुदा) हो तो ऐसी सूरत में रुम्सत है. वाजेह रहे के हुकडा इरमाते हैं मुल्की कानून की बिलाइ वर्जा भी गहर (बगावत) व बह अहदी में आता है जो गुनाह है. येही वजह है के बिगैर टिकट के ट्रेन वगैरा में सहर करना जाईज नही. और जब के

मुल्की कानून के तहत येह बता दिया गया के जो मोहरिम हैं वोही ग्राउन्ड इलोर पर तवाफ कर सकते हैं तो इस के बर खिलाफ बिगैर उजरे शरई तोरिया (बात के खिलाफ) या उजरे व बढ अहदी कुछ भी जाईज नहीं.

सुवाल (35) : कुछ लोग रजब, शा'बान और रमजान के रोजे रफते हैं और रमजान के बाद शव्वाल के छे (6) रोजे रफते हैं, क्या येह रोजे छे के बाद औरन रफना याहिये या पूरे महिने में कभी भी रफ सकते हैं, और यह अक साथ होना याहिये या अलग अलग भी रफ सकते हैं ?

अल जवाब (35) : कुरआने पाक में अल्लाह पाक इरमाता है

ان عدة الشهور عند الله اثنا عشر شهرا في كتب الله يوم خلق السموات والارض
منها اربعة حرم ذلك الدين القيم (التوبة)

बिलाशुबा अल्लाह के नजदीक महीनों की ता'दाद बारह है जो अल्लाह की किताब (लौहे महफूज) के मुताबिक उस दिन से नाफिज यली आती है जिस दिन से अल्लाह ने आस्मानों और जमीनों को पैदा किया छेन बारह महीनों में से चार हुर्मत वाले महीने हैं येही दीन का सीधा रास्ता है. वोह चार महीने मुल का'दा व मुल हिज्जा, मुहर्रम और रजब है. उजरते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله تعالى عنه इरमाते हैं के हुजुरे अकदस صلى الله تعالى عليه وآله وسلم माहे रजब में रोजे रफा करते थे. उता के हम समजते के हुजुर नागा (वकई) नहीं करेंगे और हुजुर माहे रजब में इस कदर रोजे न रफते थे के हम समज लेते के हुजुर صلى الله تعالى عليه وآله وسلم अब रोजे न रफेंगे. (सहीह मुस्लिम)

हासिले कलाम येह के माहे रजब यूंके अशहरुल हराम से है इस लिअे इस में दीगर छेबादात की तरह रोजे रफने की भी इजीलत है. और हुजुर صلى الله تعالى عليه وآله وسلم से साबित है इसी तरह माहे शा'बान में हुजुर صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने रोजा रफा है. युनान्ये,

उजरते आर्शा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا इरमाती हैं के ईसी तरुड किसी महीने में शा'बान से जियादा नईली रोजे रपते छोते उजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को नहीं देखा. (मिशकत, सईडा 178)

और ईसी तरुड अत्तरगीब वत्तरहीब में है के बा'ज रिवायतों में है के शा'बान के महीने उजूर बहुत कम नागा (वकई) करते थे तकरीबन पूरे महीने रोजे रपते थे. (अत्तरगीब वत्तरहीब, जि : 2, सईडा. 117)

रमजान शरीफ के रोजों का क्या कहना वोड तो अल्लाह तआला ने हर बन्दे मोमिन आकिल बालिग तन्दुरुस्त पर इर्ज करार दे दिया है. अलबत्ता ईस के बा'द शव्वाल के छे रोजों का रपना तो बिलाशुबा जर्हज और मुस्तहब है. युनान्थे, उदीसे मुबारका में ईस की इजीलत वारिद है.

عن ابى ايوب عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من صام رمضان ثم اتبعه
ستامن شوال فذاك صيام الدهر

रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया के जिस ने रमजान के रोजे रपे और फिर शव्वाल के छे रोजे तो येड हमेशा (पूरे साल) के रोजे शुमार होंगे. रही बात येड के मुसल्लर रपे या अलग अलग तो ईस बारे में इकडा इरमाते हैं के शव्वाल के छे रोजे यकुम शव्वाल या'नी ईद के दिन छोण कर शव्वाल की दूसरी तारीब से ले कर महीने के आबिर तक अलग अलग कर के और ईकडे दोनों तरुड रपे जा सकते हैं और येड रोजे मुस्तहब हैं रपने पर सवाब और न रपने पर कोई मुवापजअे शरई (शरई पकण) नहीं है. युनान्थे, दुर्रे मुप्तार में है :

و ندب تفريق صوم الست من شوال ولا يكره التتابع على المختار

(दुर्रे मुप्तार हाशिया ईबने आबिदीन शामी रहुल मुप्तार, जि : 2, सईडा 453)

या'नी शव्वाल के छे रोजे अलग अलग रचना मन्दूष (अच्छा) है और लगातार रचना भी जाईत है मजहबे मुप्तार में मकइह नई है.

सुवाल (36) : वोह लोग जो सउदी अरब में नोकरी करते है, और साल में अकाह बार वोह वतन में अपने घर आते है, वोह सउदी में भी मुकीम थे, और गुजरात में उन का अपना घर है, अब किसी की ट्रान्जीट इलाईट होती है, और कभी कभी 10 घंटे जितना लम्बा होट भी होता है, वैसे उज उमरु करने वालों को भी जब रिटर्न में लम्बा होट होता है, न वोह सउदी में है और न वोह वतन में है, अब वोह नमाज कसर पढे या वतन की तरफ आ रहा है समज कर पूरी पढे ? और क्या सिर्फ इराईज अदा करने से काम चल जायेगा या सुन्नत, नइल सभ पढे ?

अल जवाब (36) : कुरआने पाक में अल्लाह तआला का ईरशादे पाक है :

وإذا ضربتم في الأرض فليس عليكم جناح أن تقصروا من الصلوة
(सूरअे निसा)

या'नी जब तुम जमीन में सइर करो तो तुम पर कोई गुनाह नई के तुम नमाज में कसर करो या'नी यार रकअत इर्ज की जगह दो रकअत पढो और हदीसे पाक में है के हजरते उमर رضي الله تعالى عنه ने हुजुरे अकदसा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم से नमाजे कसर के बारे में पूछा तो हुजुर صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इरमाया के अल्लाह तआला ने सइर में तअफ्ईके नमाज का सइका किया है लिहाजा अल्लाह तआला का सइका कुबूल करो. सूरते मसुीला (पूछे गअे मसअले) में मुसाइर सउदिय्या अरबिय्या से यला जब तक अपने वतने अस्ली गुजरात के जिस गाओं या शहर में

રહતા હો ન પહુંચ જાએ વોહ મુસાફિર હી રહેગા. વતને અસ્લી મેં પહુંચ ગયા સફર ખત્મ હો ગયા અગર્યે ઈકામત કી નિયત ન હો.

(ફતાવા હિન્દિયા)

લિહાઝા કસ્ર નમાઝ પઢેગા. અલબત્તા અગર વોહ હાલતે કરાર મેં હૈ યા'ની ભાગ દૌબ મેં ન હો બલકે ઈસે ઈત્મીનાન હો તો ઐસી સૂરત મેં સુન્નત વ નફલ ભી ફરાઈઝો વાજિબાત કે સાથ અદા કરેંગે ઓર અગર હાલતે ઈઝતિરાર હૈ યા'ની સુકૂન વ ઈત્મીનાન નહીં તો ખાલી ફર્જ નમાઝ હી પઢ લે તો કોઈ હરજ નહીં.

સુવાલ (37) : બાપ બેટે મેં નહીં બનતી હૈ બરસોં સે અલગ રહતે હૈં દુઆ સલામ તો હૈ મગર બાપ બહુત નારાઝ રહતા હૈ, બેટે ને હજ કા ઈરાદા ક્રિયા બાપ ને સાફ બોલ દિયા મૈં તુઝે ના કહતા હૂં ઓર રોકતા હૂં તૂ હજ કો મત જા, મગર બેટા ગયા, ક્યા હજ કુબૂલ હોગા ? માં નારાઝ નહીં હૈ, મગર ખામોશ હૈ.

અલ જવાબ (37) : અગર બેટે કે ઊપર હજ ફર્જ હૈ તો ઐસી સૂરત મેં બેટે કો બાપ કી ઈજાઝત ઝરૂરી નહીં ઓર અગર વોહ રોકતા હૈ તો ઉસે માનના ઝરૂરી નહીં ક્યૂંકે હુક્મ હૈ **لا طاعة للمخلوق بعبية الخالق** અલ્લાહ કી નાફરમાની મેં મખ્લૂક કી ઈતાઅત નહીં કી જા સકતી હજ અદા કરના ફર્જ હૈ ઓર બાપ કા મન્અ કરના એક ફર્જ સે રોકના હૈ જિસ મેં અલ્લાહ કી નાફરમાની હૈ. લિહાઝા બેટે ને અગર હજ ફર્જ અદા ક્રિયા હૈ તો બિલા કિસી કરાહત કે હજ અદા હો ગયા રબ ને ચાહા તો કુબૂલ ભી હોગા ઓર અગર હજ ફર્જ નહીં બલકે નફલ હૈ તો ઐસી સૂરત મેં વાલિદૈન કી ઈજાઝત લેના ઝિયાદા બેહતર હૈ ઓર અગર વાલિદૈન કો ખિદમત કી ઝરૂરત હૈ તો ઉન કી ઈજાઝત કે બિગૈર જાના મકરૂહ હૈ. યુનાન્થે,

आलमगीरी में है :

ويكره الخروج الى الحج انكره احد ابويه ان كان الوالد المحتاج الى خدمة الولد
وان كان مستغنيا من خدمة فلا بأس

या'नी अगर वालिदैन में से कोई नाराज हो तो नईली उज के लिये निकलना मकरुह है अगर बाप को बेटे की बिदमत की जरूरत हो और अगर बाप मुस्तगनी (बे फिक) है बिदमत से तो बिदा किसी कराहत के उज को जा सकता है.

सुवाल (38) : हरम के एमाम के पीछे जो लोग नमाज नहीं पढते वोह लोग एद की नमाज का क्या करें ? वोह एद की नमाज कब और कैसे पढें ?

अल जवाब (37) : नमाज सहीह होने के लिये एमान शर्तें अव्वल है और हम एस के पहले बता चुके हैं एमामे हरम मुहम्मद बिन अब्दुल वहुहाब नजदी के अकाएद का मुत्तबेअ और पैरुकार होता है. वहाबी नजदी का अकीदा येह है के एन के एलावा तमाम मुसलमान मुशिरिक व बिदअती है. नीज वाजिबुल क्तल जानते हैं वगैरा जिस की बुन्याद पर उलमा का एत्तिफाक एस बात से हुवा के वहाबी अपने अकीदे की बुन्याद पर एमान से भारिज हैं एसी लिये मुसलमानों को नजदी एमाम के पीछे नमाज हरगिज नहीं पढनी याहिये याहे जुम्मा हो या एदैन हो अगर कोई शप्स एद की नमाज एमाम के पीछे न पढे तो शरअन एस की क्ता का मुतालबा नहीं किया जायेगा न वक्त के अन्दर न वक्त के बा'द हां अगर वोह शप्स याहे तो नमाजे याशत की यार रकअतें बिगैर एजाई तक्बीरात के पढ ले.

सुवाल (39) : हरम में अ'तिकाफ की निव्यत कर के पूरा न करे तो क्या हुक्म है ?

अल जवाब (39) : अ'तिकाइ की तीन किस्में हैं. (1) वाजिब
(2) सुन्नते मुअक्कदा (3) नइल व मुस्तहब.

✽ अगर किसी ने अ'तिकाइ की नज़र मानी तो वोह अ'तिकाइ वाजिब है. याहे नज़रे मुत्वक हो या नज़रे मुअल्लक हो इस अ'तिकाइ के साथ रोजा रचना लाजिम है.

✽ सुन्नते मुअक्कदा अ'तिकाइ वोह है जो रमजान शरीफ के आबिरी दस दिन का अ'तिकाइ होता है और येह अ'तिकाइ सुन्नते मुअक्कदा किंया है. नइल व मुस्तहब अ'तिकाइ के लिअे कोई वक्त व मिकदार मुतअय्यन (तै) नहीं है. हुज़ुरे अकदस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से अगर कभी अ'तिकाइ छूट जाता तो इस को बा'द में ज़रूर अदा करते थे. युनान्ये, उज़रते अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के हुज़ुर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुकीम होते तो रमजान के अशरअे अभीरुह (आबिरी अशरुह) का ज़रूर अ'तिकाइ करते अगर मुसाफिर होते तो आइन्दा साल बीस दिन का अ'तिकाइ इरमाते. मा'लूम हुवा के वाजिब व सुन्नते मुअक्कदा अगर छूट जाअे तो इस की कज़ा की जाअेगी. मुस्तहब व नइल की कज़ा नहीं अ'तिकाइ की कज़ा में कुछ तइसील है वोह येह के

(1) अगर अ'तिकाइ दिन में टूटा तो सिर्फ़ दिन, दिन की कज़ा हुइ या'नी कज़ा के लिअे सुण्डे सादिक से पहले दापिल हो और रोजा रअे इसी रोज़ शाम को गुइबे आइताब के वक्त निकल आअे.

(2) अगर अ'तिकाइ रात को टूटा हो तो रात और दिन दोनों की कज़ा करे या'नी कज़ा के लिअे शाम को गुइबे आइताब के पहले दापिल

હો રાત ભર વહાં રહે. ઓર દિન ભર રોઝા રખે ઓર અગલે દિન ગુરૂબે આફતાબ કે બા'દ મસ્જિદ સે નિકલ આએ.

(3) ઓર અગર હરમ મેં મો'તકિફ હુવા દસ દિન કે લિએ ઓર તોળ દિયા તો એસી સૂરત મેં પૂરે દસ દિન કી કઝા લાઝિમ હોગી ક્યૂંકે ઉસ ને એ'તિકાફ શુરૂઅ કર કે અપને ઊપર લાઝિમ કર લિયા ઓર એક સૂરત યેહ હૈ કે ઉસી દિન કી કઝા લાઝિમ હૈ જિસ દિન કા એ'તિકાફ ટૂટા હૈ. ક્યૂંકે એ'તિકાફ સુન્નત શુરૂઅ કરને સે લાઝિમ હોતા હૈ. મસલન રમઝાન કે દસ દિન વાલે એ'તિકાફ મેં દાખિલ હુવા ઓર 25 રમઝાન કો એ'તિકાફ ટૂટ ગયા તો સિર્ફ ઉસી 25 તારીખ તક એ'તિકાફ જો હર દિન મુસ્તકિલ ઇબાદત હૈ વોહ અદા હો ગયા. ઓર 25 કે બા'દ શુરૂઅ નહીં હુવા લિહઝા લાઝિમ ભી નહીં ઇસ લિએ ઇસ કી કઝા ભી નહીં.

સુવાલ (40) : એક દો નહીં મગર કઈ સારી ઓરતોં કો દેખા ગયા કે મક્કે મદીને કે હોટલ કે બાથરૂમ સે સાબુન ઓર શેમ્પુ ઉઠા કર લે આતી હૈં, જબ ઉન સે કહા ગયા કે યેહ ચોરી હૈ તો કહતી હૈં કે યેહ કોઈ ચોરી નહીં યેહ તો હમારે લિએ હી રૂમ મેં રખા ગયા થા કુછ ને કહા હમ ને તો સ્વીપર સે માંગ કર લિયા હૈ, (સ્વીપર ભી હોટલ કે નૌકર હોતે હૈ) યેહ માલદાર તબકે કી ઓરતોં કે હાલાત હૈં જો લાખોં રૂપે ખર્ચ કરતી હૈં ઓર છોટી છોટી ચોરિયાં કરતી હૈં ઇન કે લિએ ક્યા હુકમ હૈ બયાન કરમાએ.

અલ જવાબ (40) : આમે ઇસ્તિ'માલ મેં કિસી શખ્સ કા માલ ઉસ કી ઇજાઝત વ મર્ઝી કે બિગૈર ગૈર કાનૂની તૌર પર લે લેને કો ચોરી કહતે હૈં ઓર ઇસ અમલ કે કરને વાલે કો ચોર કહા જાતા હૈ. શરઈ તારીફ યેહ હૈ કે આકિલ બાલિગ શખ્સ કા કિસી એસી મહફૂઝ જગહ જિસ કી હિફાઝત કા ઇન્તિઝામ કિયા ગયા હો ઓર વોહ દસ દિરહમ સે યા ઇતની માલિયત યા ઇસ સે ઝિયાદા કિસી શુબે (શક) વ તાવીલ કે

बिगैर उठा लेना और उस माल के मालिक के इल्म में लाये बिगैर नाहक अपनी मिदिक्यत ठहराना. शरई इस्तिलाह में योरी कडा जाता है. जिस पर वईदें और सजाओं हैं लिहाजा सूरते मस्जिदा (पूछी गई सूरत) में गुस्ल खाने बाथरूम में रफे हुये साबुन व शेम्पू को उठा लेने पर शरई योरी का इत्लाक नहीं होगा और कई वजहों से इस को योरी के हुकूम में नहीं शुमार किया जायेगा अव्वलन येह के इन सामानों को इस तरह नहीं रफा गया है के मालिक के जेरे इन्तिजाम वोह मडकूज रफा गया है के इस के इल्म में लाये बिगैर नाहक अपनी मिदिक्यत बना रहा है.

सानियन येह के उई आम है के वोह सामाने गुस्ल मुसाफिरीन के लिअे डी इन्तिजाम किया गया है याहे ले जाओं या छोण जाओं और वहां पर गये हुये हाज्ज या मो'तमिर (उमरु करने वाले) ने बताया के होटल वालों से पूछने पर मा'लूम हुवा के जो लोग नहीं ले जाते हैं. तो बा'द में इस को इकहा कर के क्यणे की गाणी में उठा कर ले जाते हैं और क्यरा कुन्डी में डाल देते हैं जिस से सारा माल व कीमती सामान सब बरबाद हो जाता है. दोनों सूरतों से पता चला के बाथरूम में रफा हुवा साबुन व शेम्पू उठा लेने पर योरी का इत्लाक नहीं होगा. न उईन न दलालतन किसी तरह से योरी नहीं कडा जा सकता है. इस लिअे इन पर योरी का गुनाह भी नहीं होगा.

सुवाल (41) : अक बणी उअ्र के यया मियां को देखा गया की किसी तरह से मदीने से मिट्टी उठा लाये है और अब येह कहते हैं के जब मैं इन्तिकाल करूं तो इस मिट्टी को मेरी कब्र में रफ देना, क्या उन्हों ने अख्श किया ? क्या सवाब मिलेगा ? या उन्हों ने गुनाह किया ?

अल जवाब (41) : जिस तरह मरने के बा'द कब्र में मय्यित के मुंह के सामने डिब्ला रुफ ताक फोद कर उस में अहदनामा और शजरा

रखना ज़ाहज़ है और दुर्रे मुफ्तार में कइन पर अहदनामा को लिखना ज़ाहज़ करार देते हुअे लिखा है के इस से मय्यित के मगफ़िरत की उम्मीद है. इसी तरह दुर्रे मुफ्तार व तातारखानिय्या के हुवाले से लिखा है के अक शप्स ने पेशानी पर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखने की वसियत की थी इन्तिकाल के बा'द पेशानी और सीने पर बिस्मिल्लाह शरीफ़ लिख दी गई फिर किसी ने उन्हें प्वाब में देखा. और हाल पूछा तो कहा के जब मैं क़ब्र में रखा गया अज़ाब के फिरिश्ते आये फिरिश्तों ने जब पेशानी पर बिस्मिल्लाह शरीफ़ लिखी देखी तो कहा के तू अज़ाब से बच गया.

मा'लूम हुवा के मज़क़ूराला बाला यीज़ें मय्यित के साथ जो ज़ाहज़ हैं वोह सिर्फ़ इस लिअे के मरने वाले के हक में भला हो. इसी तरह मदीने की मिट्टी को क़ब्र में रखने को वसियत करना मरने के बा'द रखना येह सब कुछ मगफ़िरत की उम्मीद ही के तहत है. और इस में कोई शुभा नहीं के मदीने की मिट्टी जाके शिफ़ा और मुतबर्क है मदीने से थोणी सी मिट्टी लाने में बतौरै तबर्क कोई हरज़ नहीं और तबर्क समज़ कर क़ब्र में रखने में कोई क़बाहत (हरज़) नहीं.

हज़रते इमाम मालिक رحمته الله تعالى मदीने की मिट्टी से इस कदर प्यार करते थे के अक लम्हे के लिअे शहरे मदीना से बाहर जाना मुनासिब नहीं जानते थे बसा अवकात रफ़अे हाज़त के लिअे बाहर जाते थे तो भाग कर ज़ल्दी से आते के कहीं मेरी जान बाहर ही निकल जाये और मैं जाके मदीना से दूर रहूं. अदब का हाल येह था के कभी आप ने शहरे मदीना में जूता, यप्पल न पहने और इस्तिनज़ा पाखाने के लिअे हमेशा मदीने शरीफ़ के बाहर ही जाते थे. पता चला के आबिरी वक्त में अगर मदीने में मरना नसीब न हो तो कम से कम जाके मदीना तो क़ब्र

મેં ખાકે શિક્ષા હોગી. મુમ્કિન હૈ ઈસ કી બરકતોં સે અઝાબ મેં તપ્કીક

(કમી) હો જાએ યા બચ હી જાએ. **والله تعالى اعلم بالصواب**

મુહમ્મદ શમ્સુલ કમર કાદિરી ફૈઝી

ખાદિમે ઈફતા દારુલ ઉલૂમ બિહાર શાહ ફૈઝાબાદ, અયોધ્યા



उमीमा

७४ की उररी मा'लूमात

कुरआने पाक में अल्लाह तआला इरमाता है :

ولله على الناس حج البيت من استطاع إليه سبيلا

अल्लाह के लिये ७४ करना उस शप्स पर इरु है जो पानअे का'बा तक जाने की इस्तिताअत (ताकत, माली हैसियत) रभता है. दूसरी जगह इसी कुरआने पाक में है **اتموا الحج والعمرة لله** ७४ व उमरु अल्लाह के लिये मुकम्मल करो.

सहीह मुस्लिम शरीफ में उरते अबू हुरैरा **رضي الله تعالى عنه** से मरवी है रसूलुल्लाह **صلى الله تعالى عليه وآله وسلم** ने पुत्बा पढा और इरमाया के अे लोगो ! तुम पर ७४ इरु किया गया लिहाजा ७४ करो. (सहीह मुस्लिम)

तिर्मिजी शरीफ में उरते अबुदुल्लाह बिन मसउिद **رضي الله تعالى عنه** से रावी हुजूर **صلى الله تعالى عليه وآله وسلم** इरमाते हैं ७४ व उमरु मोहताज और गुनाहों को अैसे दूर करते हैं जैसे भट्टी से लोहे और चांटी और सोने के मेल को दूर करती है और ७४जे मजुर का सवाब जन्नत है.

दूसरी हदीसे पाक में है **من حج لم يرفث ولم يفسق رجع كيوم ولدته أمه** जिस ने ७४ किया और कोई इरुश काम न किया और न ही कोई गुनाह किया तो गोया के वोह लौटा उस दिन के मिसल जैसे उस की मां ने आज पैदा किया है. या'नी जिस तरुह बर्या जब पैदा होता है तो वे गुनाह होता है और अैसे ही हाज गुनाहों से धुला धुलाया वापस होता है. ७४ नाम है अेराम बांध कर नवीं जिल डिज्ज को अरफात में उरने और का'बा अे मुअज्जमा के तवाफ का और इस के लिये अेक पास वक्त मुकरर है के इस में येह अइआल (काम) किये जाअें तो ७४ है.

उज सिने 9 डिजरी में इर्ज हुवा और बिलाशुभा एस की इर्जियत कतई है और एस का मुन्किर (ईन्कार करने वाला) काफिर है और येह उम्र भर में सिर्फ़ अक बार बशर्ते इस्तिताअत (ताकत, माली हैसियत) इर्ज है.

(1) तमतोअ (2) किरान (3) ईकराह. इन तीनों का तफ़्सीली बयान कुतुबे फ़िफ़िय्या में मौजूद है हम सिर्फ़ बुन्यादी और जरूरी चीज़ों का जिक्र करेंगे.

उज के शराहत

उज वाजिब होने के आठ शराहत हैं जब तक वोह सब न पाअें ज़ाअें उज इर्ज नहीं होगा. वाजेह रहे के उज तीन डिस्म का है.

(1) इस्लाम (2) अगर दारुल इर्ब में हो तो येह भी जानना जरूरी है के इस्लाम के बुन्यादी उसूलों में उज अक अहम इर्ज है. (3) बालिग होना (4) आकिल होना (5) आजाह होना (6) तन्दुरुस्त होना (7) अदे राह या'नी सफ़रे भर्य का मालिक होना (8) उज का वकत होना. या'नी उज के महीनों में येह तमाम शराहत पाअें ज़ाअें.

पुजूअे अदा (वाजिब अदा करने) के लिअे चार शर्ते हैं

(1) रास्ते में अम्न होना (2) अगर औरत उज को ज़ाअे और रास्ता मुद्धते सफ़र का हो तो शौहर या महरम का होना (3) जाने के ज़माने में औरत किसी इदत में न हो (4) कैद में न हो.

सिह्लते अदा (सहीह अदाअेगी) के लिअे नव शर्ते हैं

(1) इस्लाम (2) अहराम (3) ज़मान (4) मकान (5) तमीज (6) अकल (7) इराईजे उज का बजा लाना (8) अहराम के बा'ह और

वुकूँ से पहले जिमाअ न होना (9) जिस साल अहराम बांधा उसी साल हज करना.

हज इम अदा होने की भी नव शर्तें हैं

(1) ईस्लाम (2) मरते वक्त तक ईस्लाम ही पर रहना (3) आकिल (4) बालिग (5) आजाद होना (6) अगर कादिर (ताकत) हो तो भुद अदा करना (7) नफ़ल की निश्चयत का न होना (8) दूसरे की तरफ़ से हज करने की निश्चयत न होना (9) फ़ासिद (बुरा) काम न करना.

हज के इरादत सात हैं

(1) अहराम (2) वुकूँ अरफ़ा (3) तवाफ़े जियारत (4) निश्चयत (5) तरतीब (6) हर इम का अपने वक्त पर होना (7) मकान या'नी वुकूँ जमीने अरफ़ात में होना सिवाअे बतने हरनह के वाजेह रहे के मजकूरा बाला में वुकूँ हरनह और तवाफ़े जियारत येह दो चीज़ें रुकने हज भी हैं. नवीं जिल डिज्जा के आइताब ढलने से दसवीं की सुब्हे सादिक से पेशतर तक किसी वक्त अरफ़ात में ठहरना वुकूँ अरफ़ा है जो के रुकन और तवाफ़े जियारत का अक्सर हिस्सा या'नी का'बे का चार डेरे लगाना येह रुकन है.

हज में कुल अहाइस चीज़ें पाबिज हैं

(1) मीकात से अहराम बांधना (2) सफ़ा व मरवह के दरमियान दौब लगाना. इस को सई कहते हैं (3) सई को सफ़ा से शुरुअ करना (4) अगर उज़र (मजबूरी) न हो तो पैदल सई करना (5) दिन में वुकूँ किया तो इतनी देर तक वुकूँ करे के आइताब डूब जाअे और अगर रात में वुकूँ किया तो इस के किसी पास उद तक वुकूँ करना

वाजिब नही मगर वोह ईस वाजिब का तारिक (तर्क, छोणने वाला) हुवा के दिन में गुइब तक वुकूफ करता (6) वुकूफ में रात का कुछ जुज (छिस्सा) आ जाना (7) अरफात से वापसी में ईमाम की मुताबअत (पैरवी) करना या'नी जब तक ईमाम वहां से न निकले येह भी न निकले (8) मुजदलिफा में ठहरना (9) मगरिब व ईशा की नमाज का वक्त ईशा में मुजदलिफा में आ कर पढना (10) तीनों जमरों पर दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं तीनों दिन कंकरियां मारना या'नी दसवीं को सिर्फ जमरतुल अकबा पर और ग्यारहवीं, बारहवीं को तीनों पर रमिये जिमार करना (11) जमरअे अकबा की रमी पहले दिन हल्क से पहले डोना (12) हर रोज की रमी का उसी दिन डोना (13) सर मुन्डाना या बाल कतरवाना (14) सर मुन्डाना या बाल कतरवाना येह काम अय्यामे कुरबानी में डोना (15) और येह काम हरम शरीफ में ही हो अगर्ये मिना में न हो (16) किरान और तमतोअ वाले हाजि का कुरबानी करना (17) ईस कुरबानी का हरम और अय्यामे नहर में डोना (18) तवाफे जियारत जिस को तवाफे ईफाजा भी कहते हैं ईस का अक्सर छिस्सा अय्यामे कुरबानी में डोना. येह अरफात से वापसी के बा'द तवाफ डोता है (19) तवाफ का हतीम के बाहर से डोना (20) दाहिनी तरफ से तवाफ करना या'नी का'बा शरीफ तवाफ करने वाले की बाईं जानिब हो (21) उज्र न हो तो पाउं से चल कर तवाफ करना (22) तवाफ करने में नजसते हुक्मिया से पाक डोना या'नी जुनुअ के जिस पर गुस्व फर्ज हो और बे वुजू न डोना और अगर जुनुअ और बे वुजू हो कर तवाफ किया तो ईआदा करे (23) तवाफ करते वक्त सित्र का छुपा डोना. अगर अेक उज्व का यौथाई छिस्सा या ईस से जियादा भुला रहा तो हम वाजिब डोगा जैसे के नमाज मे सित्र भुलने से नमाज फासिद (टूट) जाती है यहां

दम वाजिब होगा (24) तवाङ् के बा'द दो रकअत नमाज पढना और अगर न पढी तो दम वाजिब नहीं (25) कंकरियां और कुरबानी करने और सर मुन्डा ने में तरतीब का खयाल रखना या'नी पहले कंकरियां फिर मुकरिन और मुतमतेअ कुरबानी करे फिर सर मुन्डाअे (26) तवाङ्के सदर या'नी भीकत से बाहर रहने वाले के लिये तवाङ्के रुख्त करना. मगर डैज व निफास वाली औरत के तदारत से पहले काङ्किला खाना हो जायेगा तो इस पर तवाङ्के रुख्त नहीं (27) पुकूङ्के अरङ्क के बा'द सर मुन्डा ने तक जिमाअ न होना (28) अहराम के मन्नाआत मसलन मेला कपणा पहने और मुंह या सर छुपाने से बचना.

उज की सुन्नते कुल पन्धर हैं

(1) तवाङ्के कुदूम या'नी भीकत से बाहर आने वाले हाज्ज का सब से पहले खाने का'बा का तवाङ्क करना और येह तवाङ्क मुकरद और कारिन के लिये सुन्नत है मुतमतेअ के लिये नहीं (2) तवाङ्क का उजरे अस्वद से शुरू करना (3) तवाङ्के कुदूम या तवाङ्के इर्ज में रमल करना (4) सङ्क व मरवह के दरमियान हरी बतियों के दरमियान दौणना (5) ईमाम का मक्के में सातवीं जिल हिज्जा को खुत्बा पढना (6) और अरङ्कत में नवीं जिल हिज्जा को खुत्बा पढना (7) और मिना में ग्यारहवीं जिल हिज्जा को खुत्बा पढना (8) आठवीं की इज्ज के बा'द मक्का से खाना होना के मिना में पांच नमाजें पढ ली जायें (9) नवीं रात मिना में गुजारना (10) आङ्कताब निकलने के बा'द मिना से अरङ्कत को खाना होना (11) पुकूङ्के अरङ्क के लिये गुस्ल करना (12) अरङ्कत से वापसी में मुजदलिङ्क में रात गुजारना (13) और आङ्कताब निकलने से पहले मुजदलिङ्क से मिना को खला जाना (14) इस

और ग्यारह के बा'द जे दोनों रातें हैं उन को मिना में गुजारना और अगर तेरहवीं को भी मिना में रखा तो बारहवीं के बा'द की रात को भी मिना में रहे (15) अब्दुल या'नी वादिये मुहस्सब में उतरना सुन्नत है.

वोह बातें जे अहराम में हराम हैं

- (1) औरत से सोहबत (2) बोसा (3) मसास (4) गले लगाना (5) उस की अन्दामे नडानी (शर्मगाह) पर निगाह जब के येह यारों बातें ब शहवत हों (6) औरतों के सामने इस काम का नाम लेना (7) झोड़शं (8) गुनाह उमेशा हराम थे अब और सप्त हराम हो गये (9) किसी से दुन्यवी लणार्थ जगणा (10) जंगल का शिकार (11) उस की तरफ शिकार करने को ईशारा करना (12) या किसी तरह बताना (13) बन्दूक या बाइठ या उस के जब्द करने को छुरी देना (14) उस के अंडे तोणना (15) पर उभेणना (16) पाउं या बाजूं तोणना (17) उस का दूध दौटना (18) उस का गोशत (19) अंडे पकाना, भूनना (20) बेयना (21) ખरीदना (22) ખाना (23) अपना या दूसरे का नाधुन कतरना या दूसरे से अपना कतरवाना (24) सर से पाउं तक कहीं से कोई बाल किसी तरह जुदा करना (25) मुंह, या (26) सर किसी कपणे वगैरा से छुपाना (27) बस्ता या कपणे की बकियी या गठरी सर पर रखना (28) ईमामा बांधना (29) बुर्कअ (30) दस्ताने पहनना (31) मोजे या जुराबिं वगैरा जे वस्त कदम को छुपाये (जहां अरबी जूते का तस्मा होता है) पहनना अगर जूतियां न हों तो मोजे काट कर पहनें के वोह तस्मे की जगह न छुपे (32) सिला कपणा पहनना (33) पुशबू बालों, या (34) बदन, या (35) कपणों में लगाना (36) मिलागीरी या कुसुम, कैसर गर्ज किसी

पुशू के रंगे कपणे पहनना जब के अत्मी पुशू दे रहे हों (37) पालिस पुशू मुस्क, अंबर, जा'फराना, जवन्त्री, लोंग, धलायची, दारचीनी, जंजोल वगैरा जाना (38) ऐसी पुशू का आंचल में बांधना जिस में फिलहाल मलक हो जैसे मुस्क, अंबर, जा'फरान (39) सर या दाढी को अत्मी या किसी पुशूदार या ऐसी चीज से धोना जिस से जूअें मर जूअें (40) वस्मा (नील के पत्ते जिन से पिजाब तय्यार किया जाता है) या मेहंदी का पिजाब लगाना (41) गुंठ वगैरा से बाल जमाना (42) जैतून, या (43) तिल का तेल अगर्चे बे पुशू हो बालों या बदन में लगाना (44) किसी का सर मुन्डना अगर्चे उस का अेहराम न हो (45) जूं मारना (46) केंकना (57) किसी को उस के मारने का धारा करना (48) कपणा उस के मारने को धोना या (49) धूप में डालना (50) बालों में पारह वगैरा उस के मारने को लगाना गर्ज जूं के हलाक पर किसी तरह बाईस होना.

अेहराम के मकरहात

अेहराम में येह बातें मकरह है : (1) बदन का मेल छुणाना (2) बाल या बदन अली या साबून वगैरा बे पुशू की चीज से धोना (3) कंधी करना (4) धस तरह पुजना के बाल टूटने या जूं के गिरने का अन्देशा हो (5) अंगर-पा कुर्ता युगा पहनने की तरह कर्चों पर डालना (6) पुशू की धूनी दिया हुवा कपणा के अत्मी पुशू दे रहा हो पहनना औढना (7) कस्टन पुशू सूंधना अगर्चे पुशूदार फल या पत्ता हो जैसे लीमूं, नारंगी, पूदीना, धत्रदान (8) धत्र इरोश की दुकान पर धस गरज से बैठना के पुशू से दिमाग मुअत्तर होगा (9) सर, या (10) मूंड पर पट्टी बांधना (11) गिलाके का'अअे मुअज्जमा के अन्दर धस तरह दामिल होना के गिलाके शरीफ सर या मूंड से लगे (12) नाक वगैरा मूंड

का कोई छिस्सा कपणे से छुपाना (13) कोई ऐसी चीज पाना पीना जिस में भुशबू पणी हो और न वोह पकाई गई हो न भू जाईल हो गई हो (14) बे सिला कपणा रकू किया हुवा या पैवन्द लगा हुवा पहनना (15) तकिये पर मुंड रख कर औंधा लैटना (16) मडकती भुशबू हाथ से छूना जब के हाथ में लग न जाओ वरना हराम है (17) बाजू या गले पर ता'वीज बांधना अगर्जे बे सिले कपणे में लपेट कर (18) बिला उम्र बदन पर पट्टी बांधना (19) सिंगार करना (20) यादर औढ कर उस के आंयलों में गिर्द दे लेना जैसे गांती बांधते हैं इस तरह या किसी और तरह पर जब के सर भुला हो वरना हराम है (21) यूहीं तेहबन्द के दोनों किनारों में गिर्द देना (22) तेहबन्द बांध कर कमरबन्द या रस्सी से कसना.

वोह बातें जो अहराम में जायत हैं

(1) अंगर-भा कुर्ता युगा लैट कर ठीपर से इस तरह डाल लेना के सर और मुंड न छुपे (2) इन चीजों या पाजामा का तेहबन्द बांध लेना (3) यादर के आंयलों को तेहबन्द में धर सिना (4) डमयानी (रुपया, पैसा रखने की थैली) या (5) पट्टी या (6) हथियार बांधना (7) बे मेल छुणाओे हामाम (नहाना, गुस्ल) करना (8) पानी में गौता (डुबकी) लगाना (9) कपणे धोना जब के जूं मारने की गरज से न हो (10) मिस्वाक करना (11) किसी चीज के साओे में बैठना (12) छत्री लगाना (13) अंगूठी पहनना (14) बे भुशबू का सुर्मा लगाना (15) दाढ उभाणना (16) टूटे हुओे नाभुन को जुदा कर देना (17) दंबल या कुंसी तोण देना (18) अत्ना करना (19) इसद (नस से भून निकालना) (20) बिगैर बाल मूंडे पहने कराना (21) आंभ में जो बाल निकले उसे

जूदा करना (22) सर या बदन इस तरह आदिस्ता पुजाना के बाल न
 टूटे (23) अहराम से पहले जो पुशबू लगाई उस का लगा रहना
 (24) पालतू जानवर उंट, गांभे, बकरी, मुर्गी वगैरा जब्ज करना
 (25) पकाना (26) खाना (27) उस का दूध दौटना (28) उस के अंडे
 तोषना लूनना खाना (29) जिस जानवर को गैर महरम ने शिकार किया
 और किसी महरम ने उस के शिकार या जब्ज में किसी तरह की मदद न की
 हो उस का खाना बशर्त यह के वोह जानवर न हरम का हो न हरम में
 जब्ज किया गया हो (30) खाने के लिये मछली का शिकार करना
 (31) दवा के लिये किसी दरियाई जानवर का मारना, दवा या गिजा के
 लिये न हो निरी तंफरीह के लिये हो जिस तरह लोगों में राईज है तो
 शिकार दरिया का हो या जंगल का खुद ही हराम है और अहराम में
 सप्त तर हराम (32) बैड़ने हरम की घास उखाटना, या (33) दरभ्त
 काटना (34) खील (35) कव्वा (36) गिरगिट (38) छिपकली (39) सांप
 (40) बिखू (41) अटमल (42) मखूर (43) पिस्सू (44) मज्जी वगैरा
 खबीस व मूजी जानवरों का मारना अगर्ये हरम में हो (45) मुंड और
 सर के सिवा किसी और जगह जम्म पर पट्टी बांधना (46) सर या
 (47) गाल के नीचे तक्या रखना (48) सर या (49) नाक पर अपना या
 दूसरे का हाथ रखना (50) कान कपणे से छुपाना (51) ठोणी से नीचे
 दाढी पर कपणा आना (52) सर पर सीनी या बोरी उठाना (53) जिस
 खाने के पकने में मुश्क वगैरा पणे हों अगर्ये पुशबू हें या (54) बे पकाये
 जिस में पुशबू डाली और वोह बू नहीं देती उस का खाना पीना (55) घी
 या खर्बी या कणवा तेल या नारियल या बादाम, कदू का तेल के बसाया न
 हो बालों या बदन में लगाना (56) पुशबू के रंगे कपणे पहनना जब के

धन की पुशुभू जाती रही हो मगर कुसुम, कैसर का रंग मर्द को वैसे ही
 हराम है (57) दीन के लिये जगणना बलके हस्बे हाजत इर्ज व वाजिब
 है (58) जूता पहनना जो पाउं के उस जोण को न छुपाये (59) बे सिले
 कपणे में लपेट कर ता'वीज गले में डालना (60) आईना देखना
 (61) ऐसी पुशुभू का धूना जिस में झिलडाल मडक नहीं जैसे अगर,
 लूभान, संदल या (62) इस का आंयल में बांधना (63) निकाल करना.

मीकात का अर्थ

मीकात उस जगह को कहते हैं के मक्कअे मुअज्जमा के जाने वाले
 को बिगैर अहराम वहां से आगे जाना जरूज नहीं अगरे तिज्जरत
 वगैरा किसी और गरज से जाता हो.

मीकात पांच हैं

(1) जुल हुलैफा : येह मदीनअे तय्यिबा की मीकात है. उस
 जमाने में इस जगह का नाम अब्यारे अली है. हिन्दूस्तानी या और
 मुल्क वाले उज से पहले अगर मदीनअे तय्यिबा को जाअें और वहां से
 फिर मक्कअे मुअज्जमा को आये तो वोह भी जुल हुलैफा से अहराम
 बांधें.

(2) जते ईर्क : येह ईराक वालों की मीकात है.

(3) जुहफा : येह शामियों की मीकात है मगर जुहफा अब
 बिल्कुल मा'दूम (भत्म होना, नापैद) सा हो गया है वहां आबादी न
 रही, सिर्फ बा'ज निशान पाये जाते हैं उस के जानने वाले अब कम
 होंगे, लिहाजा अहले शाम राबेअ से अहराम बांधते हैं के जुहफा
 राबिग के करीब है.

(4) करन : येह नजद वालों की भीकात है, येह जगह ताईफ़ के करीब है.

(5) यलमलम : अहले यमन के लिअे. येही हिन्दूस्तानियों की भी भीकात है.

हज्जे तमतोअ के शराधत

तमतोअ की दस शर्तें हैं : (1) उज के महीने में पूरा तवाफ़ करना या अक्सर हिस्सा या'नी चार फ़ेरे (2) उमरु का अहराम उज के अहराम से मुकदम होना (3) उज के अहराम से पहले उमरु का पूरा तवाफ़ या अक्सर हिस्सा कर लिया हो (4) उमरु फ़ासिद न किया हो (5) उज फ़ासिद न किया हो (6) एलमाम सहीह न किया हो. एलमाम के येह मा'ना हैं के उमरु के बा'द अहराम षोल कर अपने वतन को वापस जाअे और वतन से मुराद वोह जगह है जहां वोह रहता है पैदाईश का मकाम अगर्जे दूसरी जगह हो, लिहाजा अगर उमरु करने के बा'द वतन गया फिर वापस आ कर उज किया तो तमतोअ न हुवा और अगर उमरु करने से पेशतर किया या उमरु कर के बिगैर उल्क क्रिअे या'नी अहराम ही में वतन गया फिर वापस आ कर उसी साल उज किया तो तमतोअ है. यूहीं अगर उमरु कर के अहराम षोल दिया फिर उज का अहराम बांध कर वतन गया तो येह भी एलमाम सहीह नहीं, लिहाजा अगर वापस आ कर उज करेगा तो तमतोअ होगा. (7) उज व उमरु दोनों अेक ही साल में हों (8) मक्कअे मुअज़्जमा में हमेशा के लिअे ठहरने का इरादा न हो, लिहाजा अगर उमरु के बा'द पक्का इरादा कर लिया के यहीं रहेगा तो तमतोअ नहीं और वोह अेक महीने का हो तो है (9) मक्कअे मुअज़्जमा में उज का महीना आ जाअे तो बे अहराम के न हो, न अैसा हो के अहराम है मगर चार फ़ेरे तवाफ़

के इस महीने से पहले कर युका है हां अगर भीकात से बाहर वापस जाये फिर उमरह का अहराम बांध कर आये तो तमतोअ हुवा (10) भीकात से बाहर का रहने वाला हो मक्का का रहने वाला तमतोअ नहीं कर सकता. तमतोअ की दो सूरतें हैं अक येह के अपने साथ कुरबानी का जानवर लाया, दूसरी येह के न लाये. जो जानवर न लाया वोह भीकात से उमरह का अहराम बांधे, मक्का मुअज़्जमा में आ कर तवाफ़ व सई करे और सर मून्डाये अब उमरह से फ़रिग हो गया और तवाफ़ शुरुअ करते ही या'नी संगे अस्वद को बोसा देते वक्त लब्बैक अत्म कर दे अब मक्का में बिगैर अहराम रहे. आठवीं ज़िल हिज्जा को मस्जिदुल हराम शरीफ़ से उज का अहराम बांधे और उज के तमाम अफ़आल बजा लाये मगर इस के लिये तवाफ़े कुदूम नहीं और तवाफ़े ज़ियारत में या उज का अहराम बांधने के बा'द किसी तवाफ़े नफ़ल में रमल करे और इस के बा'द सई करे और अगर उज का अहराम बांधने के बा'द तवाफ़े कुदूम कर लिया है (अगर्ये इस के लिये येह तवाफ़ मस्नून न था) और इस के बा'द सई कर ली है तो अब तवाफ़े ज़ियारत में रमल नहीं, ज्वाह तवाफ़े कुदूम में रमल किया हो या नहीं और तवाफ़े ज़ियारत के बा'द अब सई भी नहीं, उमरह से फ़रिग हो कर हल्क भी ज़रूरी नहीं. इसे येह भी इप्तिहार है के सर न मून्डाये ब दस्तूर मोहरिम रहे.

यूहीं मक्का मुअज़्जमा ही में रहना इसे ज़रूरी नहीं, याहे वहां रहे या वतन के सिवा कहीं और मगर जहां रहे वहां वाले जहां से अहराम बांधते हैं येह भी वहीं से अहराम बांधे और भीकात से भी बाहर हो गया तो भीकात से बांधे. येह इस सूरत में है, जब के किसी और गरम से हरम या भीकात से बाहर जाना हो और अगर अहराम बांधने के लिये हरम से बाहर गया तो इस पर हम वाजिब है मगर

जब के वुक्फ़ से पहले मक्का में आ गया तो साकित हो गया और मक्का के मुखज्जमा में रहा तो हरम में अहराम बांधे और बेहतर यह है के मक्का के मुखज्जमा में हो और इस से बेहतर यह के मस्जिद हाराम में हो और सब से बेहतर यह के हतीम शरीफ़ में हो. यूहीं आठवीं को अहराम बांधना जरूरी नहीं, नवीं को भी हो सकता है और आठवीं से पहले भी बड़े यह अफ़जल है. तमत्तेअ करने वाले पर वाजिब है के दसवीं तारीख को शुकाने में कुरबानी करे, इस के बा'द सर मून्डाये. अगर कुरबानी की इस्तिताअत (ताकत) न हो तो इसी तरह रोजे रभे जो किरान वाले के लिये हैं.

मुतमत्तेअ उमरह करने के बा'द अय्यामे इकामत में क्या करें

(1) अब यह सब हुज्जत (कारिन, मुतमत्तेअ, मुफ़रद कोई हो) के मिनना के जाने के लिये मक्का के मुखज्जमा में आठवीं तारीख को इन्तिज़ार कर रहे हैं अय्यामे इकामत में जिस कदर हो सके निरा तवाफ़ बिगैर इजतिबाअ व रमल व सई करते रहें के बाहर वालों के लिये यह सब से बेहतर इबाहत है और हर सात फ़ेरो पर मकामे इब्राहीम عليه السلام में दो रकअत नमाज़ पढ़ें. हो सके तो मज़ीद उमरे करते रहें. सात ज़िल हिज्जत तक. (दुर्रे मुफ़्तार)

(2) ज़ियादा अहतियात यह है के औरतों को तवाफ़ के लिये शब के दस ग्यारह बजे जब हुजूम कम हो तो ले जाएं. यूहीं सफ़ा व मरवह के दरमियान सई के लिये भी.

(3) औरतें नमाज़ फ़रोदगाह डी में पढ़ें. नमाज़ों के लिये जो दोनों मस्जिद करीम में हाज़िरी होती हैं जहालत है के मक्सूद सवाब है

और पुढे उजुरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया के “औरत को मेरी मस्जिद में नमाज पढने से जियादा सवाब घर में पढना है” हां औरतें मक्काके मुअज़्जमा में रोजाना अेक बार रात में तवाइ कर लिया करें और मदीनके तय्यिबा में सुब्हो शाम सलातो सलाम के लिअे हाजिर होती रहें.

(4) अब या मीना से वापसी के बा'द जब कभी रात व दिन में जितनी बार का'बाके मुअज़्जमा पर नज़र पणे **لا اله الا الله والله اكبر** तीन बार कहें और नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुइद भेजें और दुआ करें के वक्ते कुबूल है.

तवाइ में येह बातें हराम हैं

तवाइ में अगरे नइल हो एस में येह बातें हराम हैं : (1) बे पुजू तवाइ करना (2) कोई उज्व सित्र में दाखिल है उस का यहारुम (यौथाई छिस्सा) खुला होना मसलन रान या आजाद औरत का कान या कलाई (3) बे मजबूरी सुवारी पर या किसी की गोद में या कन्धों पर तवाइ करना (4) बिला उज़र बैठ कर सरकना या घुटनों पर चलना (5) का'बा को दाहिने हाथ पर ले कर उल्टा तवाइ करना (6) तवाइ में हतीम के अन्दर हो कर गुजरना (7) सात कैरों से कम करना.

तवाइ में 15 बातें मक़ूह हैं

येह बातें तवाइ में मक़ूह हैं : (1) हुजूल बात करना (2) बेयना (3) ખरीदना (4) हम्दो ना'त व मन्कबत के सिवा कोई शे'र पढना (5) जिक या दुआ या तिलावत या कोई कलाम जुलन्द आवाज से करना (6) नापाक कपणे में तवाइ करना (7) रमल या (8) एजतिबाअ

या (9) बोसअे संगे अस्वद जहां जहां एन का हुकम है तर्क करना
 (10) तवाङ् के इरों में जियादा इस्ल देना या'नी कुछ इरे कर लिअे इर
 देर तक ठहर गअे या और किसी काम में लग गअे बाकी इरे बा'द को
 क्तिअे मगर वुजू जाता रहा तो कर आअे या जमाअत काईम हुई और
 ईस ने अभी नमाज न पढी तो शरीक हो जाअे बल्के जनाजे की नमाज में
 भी तवाङ् छोण कर मिल सकता है बाकी जहां से छोणा था आ कर पूरा
 कर ले. यूहीं पेशाब पाखाना की जरूरत हो तो यला जाअे वुजू कर के
 बाकी पूरा करे (11) अेक तवाङ् के बा'द जब तक उस की रकअतें न पढ
 ले दूसरा तवाङ् शुरुअ कर देना मगर जब के कराहते नमाज का वक्त हो
 जैसे सुब्हे सादिक से बुलन्दिअे आफ्ताब तक या नमाजे अस्र पढने के
 बा'द से गुर्बे आफ्ताब तक के ईस में मुतअदद तवाङ् बे इस्ल नमाज
 जाईज हैं वक्ते कराहत निकल जाअे तो हर तवाङ् के लिअे दो रकअत
 अदा करे और अगर भूल कर अेक तवाङ् के बा'द बिगैर नमाज पढे
 दूसरा तवाङ् शुरुअ कर दिया तो अगर अभी अेक इरा पूरा न किया हो
 तो छोण कर नमाज पढे और पूरा इरा कर लिया है तो उस तवाङ् को
 पूरा कर के नमाज पढे. (12) पुत्बअे ईमाम के वक्त तवाङ् करना
 (13) जमाअते इर्ज के वक्त तवाङ् करना हां अगर खुद पडली जमाअत
 में पढ चुका है तो बाकी जमाअतों के वक्त तवाङ् करने में हरज नहीं
 और नमाजियों के सामने से गुजर भी सकता है के तवाङ् भी नमाज ही
 की मिस्ल है (14) तवाङ् में कुछ खाना (15) पेशाब पाखाना या रीह
 (हवा, गेस) के तकाजे में तवाङ् करना.

वोह जातें जे तवाङ् व सई दानों में जायत हैं

येह जातें तवाङ् व सई दानों में मुबाह हैं : (1) सलाम करना
 (2) जवाब देना (3) हाजत के लिअे कलाम करना (4) इतवा पूछना

(5) इतवा देना (6) पानी पीना (7) उम्हो ना'त व मन्कभत के अश्मार आहिस्ता आहिस्ता पठना और सध में जाना भी जा सकता है.

सध में येह बातें मकरुह हैं

सध में येह बातें मकरुह हैं : (1) बे हाजत धस के डेरों में जियादा इंसिला देना मगर जमाअत काँम हो तो यला जाये. यूही शिकते जनाजा या कजाये हाजत या तजदीदे पुजू को जाना अगरे सध में पुजू जरूरी नहीं (2) बरीदो इरोप्त (3) कुजूल क्लाम (4) सफा या मरवह पर न यठना (5) मर्द का मिना में बिला उज़र (मजबूरी के बिगैर) न दौणना (6) तवाइ के बा'द बहुत तापीर कर के सध करना (7) सित्रे औरत न होना (8) परेशान नज़री या'नी धधर उधर कुजूल देबना सध में भी मकरुह है और तवाइ में और जियादा मकरुह (9) मर्द का मसआ में बिला उज़र न दौणना.

तवाइ व सध के मसाधल में मर्द व औरत का इर्क

तवाइ व सध के सब मसाधल में औरतें भी शरीक हैं मगर (1) धजतिबाअ (2) रमल (3) मिना में दौणना येह तीनों बातें औरतों के लिअे नहीं (4) मुजाहमत (रुकावट, मुमानअत) के साथ जोसअे संगे अस्वद (5) रुकने यमानी को धूना या (6) का'बा से करीब होना या (7) जमजम के अन्दर नज़र करना या (8) पुद पानी भरने की कोशिश करना, येह बातें अगर यूँ हो सकें के ना महरम से बदन न धूअे तो प्बैर वरना अलग थलक रहना धन के लिअे सब से बहतरे है.

रमी में बारह चीजें मकरह हैं

रमी में ये छ चीजें मकरह हैं : (1) दसवीं की रमी गुड़बे आइताब के बा'द करना (2) तेरहवीं की रमी द्योपहर से पहले करना (3) रमी में बणा पथर मारना (4) बणे पथर को तोण कर कंकरियां बनाना (5) मस्जिद की कंकरियां मारना (6) जमरह के नीचे जो कंकरियां पणी हैं उठा कर मारना के ये छ मर्दूद कंकरियां हैं, जो कबूल होती हैं उठा ली जाती हैं के क्रियामत के दिन नेक्रियों के पल्ले में रपी जाअेंगी वरना जमरों के गिर्द पछाण हो जाते हैं (7) नापाक कंकरियां मारना (8) सात से क्रियादा मारना (9) रमी के दिअे जो जहत (जगह, सिम्त) मजकूर दुर्घ उस के खिलाई करना (10) जमरह से पांय हाथ से कम झासिले पर बणा होना क्रियादा का मुजायका (भराबी, नुक्सान) नहीं (11) जमरों में खिलाई तरतीब करना (12) मारने के बदले कंकरी जमरेह के पास डाल देना.

अरइात में जोहर व असर की नमाज

द्योपहर ढलते ही बल्ले ईस से पहले के ईमाम के करीब जगह मिले मस्जिदे नमरह जाओ सुन्नतें पढ कर खुत्बा सुन के ईमाम के साथ जोहर पढो ईस के बा'द बे तवक्कुफ (बिगैर रुके) असर की तकबीर'होगी मअ जमाअत से असर पढों भीय में सलाम व कलाम तो क्या मा'ना सुन्नतें भी न पढों और बा'दे असर भी नइल नहीं ये छ जोहर व असर मिला कर पढना भी जाईज है के नमाज या तो सुल्तान पढाये या वो छ जो ६४ में ईस का नाईब हो कर आता है जिस ने जोहर अकेले या अपनी पास जमाअत से पढी उसे वक्त से पहले असर पढना जाईज

नहीं और जिस हिक्मत के लिये शरअ ने यहां जोहर के साथ अस्र मिलाने का हुक्म फरमाया है या'नी गुर्बे आफ्ताब तक दुआ के लिये वक्त खाली मिलना वोह जाती रहेगी.

अरफ़ा का पुर्कूफ़

खयाल करो जब शरअ को येह वक्त दुआ के लिये फ़ारिग करने का एस कदर अहतिमाम है के अस्र को जोहर के साथ मिला कर पढने का हुक्म दिया तो एस वक्त और काम में मशगूली किस कदर बेहूदा है. बा'ज अहमकों को देखा है के एमाम तो नमाज में है या नमाज पढ कर मौकुफ़ को किया और वोह खाने, पीने, हुक्के, याअे उठाने में हैं. खबरदार ऐसा न करो, एमाम के साथ नमाज पढते ही फ़ौरन मौकुफ़ (या'नी वोह जगह के नमाज के बा'द से गुर्बे आफ्ताब तक वहां खणे हो कर जिको दुआ का हुक्म है उस जगह को) रवाना हो जाओ और मुम्किन हो तो गिंट पर के सुन्नत भी है और हुजूम (भीड, जियादा पब्लीक) में दबने कुयलने से मुडाफ़त (हिफ़ात) भी.

बा'ज मतूफ़ एस मजमअ में जाने से मन्ख करते और तरह तरह उराते हैं एन की न सुनो के वोह पास नुजूले रहमते आम की जगह है हां औरतें और कमजोर मर्द यहीं से खणे हुअे दुआ में शामिल हों के बतने अरफ़ा के सिवा येह सारा मैदान मौकुफ़ है और येह लोग भी यही तसव्वुर करें के हम एस मजमअ में हाजिर हैं अपनी ढेढ एंट की अलग न समजें. एस मजमअ में यकीनन ब कसरत औलिया बल्के एल्यूस व भिजर علیها السلام हो नबी भी मौजूद हैं येह तसव्वुर करें के अन्वारो बरकात जो मजमअ में एन पर उतर रहे हैं उन का सदका हम भिकारियों

को भी पहुंया है. यूं अलग हो कर भी शामिल रहेंगे और जिस से हो सके तो वहां की हाजिरी छोणने की चीज नहीं. अइजल येह है के एमाम से नजदीक जबले रहमत के करीब जहां सियाह (काले) पथर का इर्श है, वोह ब डिब्बा एमाम के पीछे भणा हो जब के एन इजाएल के हुसूल में वक्त या किसी को अजियत (तकलीफ) न हो वरना जहां और जिस तरह हो सके पुकूफ करे एमाम की दाहिनी जनिब और बाअें बाजू से अइजल है येह पुकूफ ही उज की जान और एस का भणा रुकन है, पुकूफ के बिअे भणा रहना अइजल है शर्त या वाजिब नहीं, बैठा रहा जब भी पुकूफ हो गया पुकूफ में नियत और ३ ब डिब्बा होना अइजल है.

नोट : भतने उरना अरफात में हरम के नालों में से अेक नाला है मस्जिदे नमरुह के पश्चिम की तरफ या'नी का'बे की तरफ है वहां पुकूफ जाईज नहीं.

पुकूफ की सुन्नतें

पुकूफ में येह उमूर सुन्नत हैं : (1) गुस्ल (2) दोनों भुत्भों की हाजिरी (3) दोनों नमाजें मिला कर पढना (4) बे रोजा होना (5) भा पुजू होना (6) नमाजों के भा'द इरन पुकूफ करना.

पुकूफ के मकरहात

यहां येह भातें मकरुह हैं : (1) गुरुबे आइताब से पहले पुकूफ छोण कर रवानगी जब के गुरुब तक हुदुदे अरफात से बाहर न हो जाअे वरना हराम है. (2) नमाजे असर व जोहर मिलाने के भा'द मौकुफ को जाने में देर (3) उस वक्त से गुरुब तक भाने पीने या (4) तवज्जोह भुदा के सिवा किसी काम में मशगूल होना (5) कोई हुन्यवी बात करना

- (6) गुर्ब पर यकीन हो जाने के बाद रवानगी में देर करना
 (7) मगरिब या ईशा अरफ़ात में पढ़ना.

तम्बीह : मौकुफ़ में छत्री लगाने या किसी तरह साया याहने से उत्तल मकदूर बयो हां जो मजबूर है वोह मा'ज़ूर है.

तम्बीह मज़री अशह मज़री

बद निगाही हमेशा हराम है न के अहराम में न के मौकुफ़ या मस्जिदुल हराम में न के का'बअे मुखज़्ज़मा के सामने न के तवाफ़े बैतुल हराम में, येह तुम्हारे बहुत ईम्तिकान का मौकअ है औरतों को हुक्म दिया गया है के यहां मुंह न छुपाओ और तुम्हें हुक्म दिया गया है के इन की तरफ़ निगाह न करो यकीन जानो के येह बणे गैरत वाले बादशाह की बान्दियां हैं और उस वक्त तुम और वोह पास दरबार में छाज़िर हो. बिना तश्बीह शेर का बय्या उस की बगल में हो उस वक्त कौन उस की तरफ़ निगाह उठा सकता है तो अल्लाह पाक वाहिदे कइहार की कनीज़ें के उस के पास दरबार में छाज़िर हैं उन पर बद निगाही किस कदर सप्त होगी. (ولله المثل الاعلى) हां हां होशियार ! ईमान बयाअे हुअे कल्लो निगाह संभाले हुअे हरम वोह जगह है जहां गुनाह के ईरादे पर पकणा जाता और अेक गुनाह लाख गुनाह के बराबर ठहरता है, ईलाही धैर की तौफ़ीक दे. आमीन

हजे गदल

ईबादत की तीन किस्में हैं : (1) बदनी (2) माली (3) मुरक़ब.

ईबादते बदनी में नियाबत नहीं हो सकती या'नी अेक की तरफ़ से दूसरा नहीं कर सकता जैसे नमाज़, रोज़ा.

માલી મેં નિયાબત બહર હાલ જારી હો સકતી હૈ જૈસે ઝકાત વ સદકા.

મુરક્કબ મેં અગર આજિઝ હો તો દૂસરોં કી તરફ સે કર સકતા હૈ વરના નહીં જૈસે હજ. રહા સવાબ પહુંચાના કે જો કુછ ઇબાદત કી ઉસ કા સવાબ ફુલાં કો પહુંચે ઇસ મેં કિસી ઇબાદત કી તફ્સીલ નહીં હર ઇબાદત કા સવાબ દૂસરે કો પહુંચા સકતા હૈ. નમાઝ, રોઝા, ઝકાત, સદકા, હજ, તિલાવતે કુરઆન, ઝિક, ઝિયારતે કુબૂર, ફર્ઝ વ નફલ સબ કા સવાબ ઝિન્દા યા મુર્દા કો પહુંચા સકતા હૈ ઓર યેહ ન સમઝા જાએ કે ફર્ઝ કા પહુંચા દિયા તો અપને પાસ ક્યા રહ ગયા કે સવાબ પહુંચાને સે અપને પાસ સે કુછ ન કિયા, લિહાઝા ફર્ઝ કા સવાબ પહુંચાને સે ફિર વોહ ફર્ઝ ઓદ ન કરેગા કે યેહ તો અદા કર ચુકા ઇસ કે ઝિમ્મે સે સાકિત હો ચુકા વરના સવાબ કિસ શૈ (ચીઝ) કા પહુંચાના હૈ.

(દુરૈ મુખ્તાર, રદુલ મુખ્તાર, આલમગીરી)

ઇસ સે બ ખૂબી મા'લૂમ હો ગયા કે ફાતિહા મુરવ્વજા જાઈઝ હૈ કે વોહ ઇસાલે સવાબ હૈ ઓર ઇસાલે સવાબ જાઈઝ બલ્કે મહમૂદ, અલબત્તા કિસી મુઆવઝે પર ઇસાલ કરના મસલન બા'ઝ લોગ કુછ લે કર કુરઆને મજીદ કા સવાબ પહુંચાતે હૈં યેહ નાજાઈઝ હૈ કે પહલે જો પઠ ચુકા હૈ ઉસ કા મુઆવઝા લિયા, તો યેહ બૈઅ હુઈ ઓર બૈઅ કત્અન બાતિલ વ હરામ ઓર અગર અબ જો પઢેગા ઉસ કા સવાબ પહુંચાએગા તો યેહ ઇજારા હુવા ઓર તાઅત પર ઇજારા બાતિલ હો.

હજ્જે બદલ કે શરાઇત

હજ્જે બદલ કે લિએ ચન્દ શર્તે હૈં : (1) જો હજ્જે બદલ કરાતા હો ઉસ પર હજ ફર્ઝ હો યા'ની અગર ફર્ઝ ન થા ઓર હજ્જે બદલ કરાયા

तो उज इर्ज अदा न हुवा, लिहाजा अगर बा'द में उज उस पर इर्ज हुवा तो येह उज उस के लिअे काई न होगा बल्के अगर आजिज हो तो फिर उज कराअे और कादिर हो तो पुढ करे. (2) जिस की तरफ से उज किया जाअे वोह आजिज हो या'नी वोह पुढ उज न कर सकता हो अगर इस काबिल हो के पुढ कर सकता है तो उस की तरफ से नहीं हो सकता अगर ये बा'द में आजिज हो गया, लिहाजा उस वक्त अगर आजिज न था फिर आजिज हो गया तो अब दोबारा उज कराअे. (3) वक्ते उज से मौत तक उजूर (मजबूरी) बराबर बाकी रहे अगर दरमियान में इस काबिल हो गया के पुढ उज कर ले तो पहले जो उज किया जा युका है वोह ना काई है. हां अगर वोह कोई ऐसा उजूर था जिस के जाने की उम्मीद ही न थी और इत्तिफाकन जाता रहा तो वोह पहला उज जो उस की तरफ से किया गया काई है मसलन : वोह नाबीना (अंधा) है और उज कराने के बाद अंधयारा (दिखने वाला) हो गया तो अब दोबारा उज कराने की जरूरत न रही. (4) जिस की तरफ से किया जाअे उस ने हुक्म दिया और बिगैर उस के हुक्म के नहीं हो सकता. हां वारिस ने मूरिस (विरासत या तर्का पहुंचने वाले) की तरफ से किया तो इस में हुक्म की जरूरत नहीं. (5) मसारिक (भर्य) उस के माल से हां जिस की तरफ से उज किया जाअे लिहाजा अगर मामूर (मुकरर कदा) ने अपना माल सर्फ किया उजजे बदल न हुवा.

दुआईया कलिमात : मौला तबारक व तआला की बारगाह में दुआ गो हूं के इस किताब की तरतीब व तहजीब में कहीं कोई गलती, लज्जिश हुई हो तो अपने करम से मुआफ़ इरमाअे और कारिईन (पढने वालों) के लिअे नइअ बप्श बनाअे. **وماتوفيقى الابالله**

अल अब्द मुहम्मद

शम्सुल क्मर कादिरि ईजी

ક્યા હજ મકબૂલ ? અઝ : હુઝૂર શૈખુલ ઇસ્લામ

હઝરત શૈખુલ ઇસ્લામ કા વીજાપૂર મેં સ્ટેજ પ્રોગ્રામ થા તકરીર ઉમૂનન રાત 11 બજે પહલે શુરૂઅ નહીં હોતી હઝરત અપને મેઝબાન કે ઘર કિયામ પઝીર થે, દસ્તરખ્વાન પર હી મેઝબાન કે ઘર કે દો બન્દોં ને હઝરત સે એક સુવાલ કિયા યેહ દોનોં ઔર ઘર કે કુછ ઔર લોગ ઉસી સાલ કુછ મહીને પહલે હી હજ કે ફરાઈઝ સે ફારિગ હો કર આએ થે. સવાલ યેહ થા કે હમ હજ કો ગએ હમારે હિસાબ સે હમ ને સારે અરકાન અદા કિયે. અબ સુવાલ યેહ હૈ કે હમારી હજ મકબૂલ હૈં યા નહીં યેહ જાનને કે લિએ કોઈ અલામત (નિશાની) હૈ ક્યા ? હમેં કેસે પતા ચલે કે હમારી હજ કબૂલ હુઈ ?

હઝરત ને ફૌરન ફરમાયા : હાં અલામત હૈ ઔર ઐસી વાઝેહ (ખુલી / રૌશન) અલામત હૈ કે આપ ખુદ પતા કર સકતે હો, કે આપ કી ઈબાદત કુબૂલ હુઈ યા નહીં હજ કો જાને સે પહલે આપ અપને આપ કો દેખે કોઈ ખામી, કોઈ ઐબ યા ગુનાહ જો અપને મેં થા ક્યા જા કર આએ તો દૂર હુવા ? યા ફિર જાને સે પહલે જો ઈબાદતેં કરતે થે વોહ બઢી ? ક્યા ઝૌક શૌખ બઢા ? અગર તુમ્હારા જવાબ હાં હૈ તો આપ કી ઈબાદત મકબૂલ હુઈ ઔર અગર જવાબ ના મેં હૈ યા'ની ન ગુનાહ કમ હુવા ન ઈબાદતેં બઢી તો મા' લો કે તુમ ઘુમ ફિર કર વાપસ આ ગએ. યેહી મુઆમલે તુમ્હારે રોઝે, તુમ્હારી નમાઝ કે લિએ હૈ કે ઈબાદત ગુનાહ કો કમ ન કરે તો વોહ ઈબાદત કેસી ?

હઝરત ને ઔર ફરમાયા : અગર ઈન્સાન દો બાલ્ટી પાની લે કર બાથરૂમ મેં જાએ પૂરા સાબુન ઘિસ ડાલે ખૂબ પાની બહાએ મગર બદન કા મેલ દૂર ન હુવા તો વોહ નહાયા નહીં ફુઝૂલ પાની બહાયા જબ

ईन्सान हरम तक जाओ और आ'माल करे तौबा करे तो तौबा का असर दिखना याहोओ. अब हम येह गौर करे और हर उज येह सोये के उज उमरुड करने के बा'द कुछ तौबा की असर दिखती हैं या नहीं !

मकुबूल उज अल : सय्यिद दादा बापु

और आगे बढे ओक भरतबा मदीनओ मुनव्वरा में हम सावर कुंडला वाले सय्यिद दादा बापु के कमरे में थे और बापु के ओक याहने वाले ने बापु से सुवाल किया बापु हम देखते हैं के आप हर साल उज को आते हो आप ने कुल कितने उज किये ?

बापुने जवाब दिया : भाई मैं ने बे शुमार उज किये हैं मेरी वालिदा मोडतरमा उयात है और मैं दिन में कई भरतबा उन को देखता हूं और अल्लाह का वा'दा है मेरी हर नजर पर ओक उज का सवाल मिलता है. तुम ने येह समज लिया के ईन्डिया से सउदी अरब आना जाना और सई, तवाइ, मिना, अरफात जाना ही उज है ओसा नहीं है आदमी अपने बाप के येहरे को महब्बत की नजर से देखे तो भी ओक मकुबूल उज है. मां बाप अगर झूत हो गओ तो उन की कुबूर (कब्रों) की जियारत पर भी उज का सवाल है यहां तक के याशत की दो रकअत नमाज पर भी उज व उमरुड का सवाल है.

अइसोस कौम पर ! हम मां बाप की जिदमत नहीं करते बणों की ता'जीम नहीं करते, छोटी पर शइकत नहीं करते और पांच सात उज और बारह पन्डरह उमरुड करते हैं हिल पथर बने हुओ है लोगों का उक मारते हैं. अल्लाह तौईक दे हमें अखे अप्लाक वाला बनाओ.

आमीन

मायूस न होने वाला हाथ

उमरते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّارِ
 इरमाते हैं : अक आबिद कडते हैं : मैं मुतवातिर कई साल तक
 उज की सआदते उम्मा से सरइराज होता रहा और हर साल
 अक दरवेश को का'बअे मुअज़्जमा का दरवाजा पकडे देया.
 जब वोह ط إِلَهُمْ لَبَّيْكَ ط कहता तो गैब से आवाज सुनाई
 देती : "لَا لَبَّيْكَ". मैं ने यौदहवें साल उस शप्स से पूछा : अै
 दरवेश तू बहरा तो नहीं ? उस ने जवाब दिया : "मैं सब कुछ
 सुन रहा हूं." मैं ने कहा : फिर येह तकलीफ़ क्यूं उठाता है ? उस
 ने कहा : या शैख ! मैं हल्किया बयान करता हूं के अगर
 बज्जअे 14 साल के यौदह उमर साल मेरी उम्र हो और बज्जअे
 साल भर के, हर रोज उमर बार येह जवाब "لَا لَبَّيْكَ" सुनाई
 दे तो फिर भी इस दरवाजे से सर न उठाउंगा. आप
 رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى इरमाते हैं के अभी हम मसइके गुइत्गू थे के
 अयानक आस्मान से अक कागज उस के सीने पर गिरा, उस ने
 वोह कागज मेरी तरफ़ बढाया, मैं ने पढा तो उस में लिखा
 था : "अै मालिक बिन दीनार ! तू मेरे बन्दे को मुज से जुदा
 करता है के मैं ने इस के कई साल के उज कबूल नहीं किये, अैसा
 नहीं बल्के इस मुदत में आने वाले तमाम हाजियों के उज भी
 इसी की पुकार की बरकत से कबूल किये हैं ताके कोई मेरी बारगाह
 से मइइम न जाअे."

येह क्यूं कडूं मुज को येह अता डो येह अता डो
 वोह डो, के हमेशा मेरे घर भर का भला डो (जौके ना'त)
 صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

दुआ कबूल न होने की हिक्मते

ईस्लामी भाईयो! इस हिकायत से हमें येह भी मदनी कूल मिले के कबूलिय्यते दुआ में ज्वाह कितनी ही ताप्पीर डो हिल भरदाशता नहीं होना चाहिये, हम ताप्पीर की मसलहतें नहीं जानते, यकीनन कबूलिय्यते दुआ में ताप्पीर बल्ले सिरे से दुआ की कबूलिय्यत का ईजहार न होना भी हमारे हक में मुझीह होता है. मेरे आका आ'ला उजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के वालिदे गिरामी रईसुल मुतकत्विलमीन उजरते मौलाना नकी अली भान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के इरमान का फुलासा है : हिक्मते ईलाही, के कभी तू बराहे नादानी कोई चीज तलब करता है और (वोह غَزْوَجَل) बराहे मेहरबानी तेरी दुआ कबूल नहीं इरमाता क्यूंके तू जो मांग रहा होता है वोह अगर अता कर दिया जाये तो तुझे नुकसान पडोये. मसलन तू दौलत मांगे और तुझे मिल जाये तो ईमान खतरे में पड जाये, या तू सिद्धत मांगे और उस का मिलना तेरी आपिरत के लिये नुकसान देह डो इस लिये वोह तेरी दुआ कबूल नहीं इरमाता. पारह 2 सूरतुल बकरह आयत नम्बर 216 में ईशाह होता है :

عَسَىٰ أَنْ تَجِبُوا شَيْئًا وَهُوَ
شَرٌّ لَكُمْ

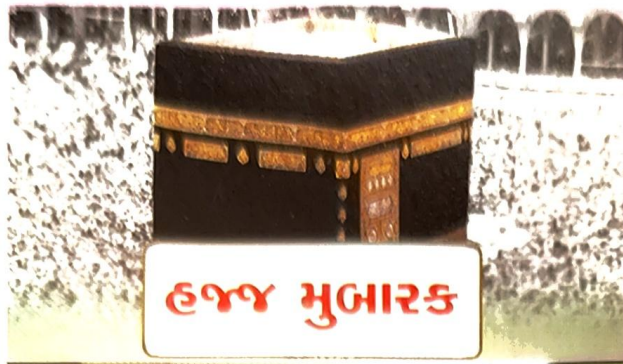
तरजमअे कन्जुल एमान : करीब है के
कोई बात तुम्हें पसन्द आये और वोह
तुम्हारे हक में बुरी हो.

❁ किस के दर पर मैं जाऊंगा मौला ! ❁

हुआ कबूल हो या न हो मांगने में कोताही नहीं करनी
चाहिये अपने परवर दगार **كَلِّفُوا** को पुकारते रहना भी बहुत
बडी सआदत और हकीकत में एबादत है. इस जिम्न में मजीद
अेक खिकायत मुलाहजा हो : अेक अहकुल उम्र जुजुर्ग अेक नौ
जवान के साथ उज करने गये, जूं ही अेहराम बांध कर कडा :
لَبَّيْكَ (या'नी मैं तेरी बारगाह में हाजिर हूं) गैब से आवाज आई :
لَا لَبَّيْكَ (या'नी तेरी हाजिरी कबूल नहीं) नौ जवान हाजि ने उन
से कडा : क्या आप ने येह जवाब सुना ? बूढे हाजि ने इरमाया :
हो हां, मैं तो 70 साल से येह जवाब सुन रहा हूं ! मैं हर बार
अर्ज करता हूं **لَبَّيْكَ** और जवाब आता है **لَا لَبَّيْكَ** : नौ जवान ने
कडा : फिर आप क्यूं आते, सहर की तकालीक उठाते और जुद
को थकाते हैं ? बूढे हाजि साहिब रो कर कहने लगे : फिर मैं किस
के दरवाजे पर जाऊँ ? मुझे ज्वाह रद किया जाये या कबूल, मैं ने
तो बस यही आना है, इस दर के सिवा मेरी कहीं पनाह नहीं.
गैब से आवाज आई : "जाओ ! तुम्हारी सारी हाजिरियां
कबूल हो गईं." (तفسير روح البیان १०८ ص १२१)

वोह सुनें या न सुनें उन की बहर डाल पुरी

दह दिल उम तो कडे जायेगे ان شاء الله



हज्ज मुबारक

लठ्ठैक अल्ला हुम्म लठ्ठैक
लठ्ठैक ला शरीक लक लठ्ठैक
ईन्नल हम्द वन-नेअमत
लकवल मुल्क ला शरीक लक

हज्ज कब वाजिब होगा?

तिरमीज़ी व ईन्नेमाज ईन्ने उमर
रहियल्लाहो तआला अन्हो से रावी है,
ओक शप्सन अर्ग की कया चीज़
हज्ज को वाजिब करती है?
इरमाया, तोशा और सवारी



गुनाह धुल जाते है

इरमाने मुस्तुफ़ा

सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम :
हज्ज करो! भेशक! हज्ज गुनाहों को
ऐसे धो डालता है जैसे पानी मेल को.



इरमाने मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम :

मरते ही जन्नतमें दाखिला,

जो शप्स हज्ज या उमराह के लिये घरसे निकला और उसका
वे निकलना सिर्फ़ इसी पजहसे हुआ (कोई और गरज़ ना
हो) फिर रास्तेमें मर गया उसके लिये कोई इकावट ना होगी
और न उसका हिसाब होगा और उससे इरमाया जायेगा,
'जो जन्नतमें दाखिल हो जा'.